अनिवार्य नहीं था भारत विभाजन 6 | उसने नेताजी को बचाने हेतु पति की हत्या कर दी 7 | मुसीबत बनते मुस्लिम शरणार्थी 10

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

प्र. श्रावण (शुद्ध) कृष्ण 14, वि.2080, युगाब्द 5125, 16 जुलाई, 2023

मुस्लिम समाज के आदर्श नायक

आमुख कथा

समाज को बाँटती है कट्टर व मतांध शासकों एवं आक्रांताओं को नायक मानने की प्रवृत्ति

हजारों - लाखों हिंदुओं के कातिल मतांध मुस्लिम आक्रांता एवं शासक

patheykan@gmail.com

जन जागृति

1 जून के अंक में 'जनजाति समुदाय क्यों है आंदोलित?' आमुख कथा पढ़ी। उक्त जानकारी पढ़ने पर ध्यान आया कि अनुसूचित जनजाति के 5 प्रतिशत मतांतरित नौकरी व अन्य शासकीय अनुदान ले रहे हैं 70 प्रतिशत का लाभ। जो चौंकाने वाला है। जिन को वास्तविक लाभ मिलना चाहिए था वे तो वंचित हो रहे हैं। डी-लिस्टिंग हुंकार महारैली के माध्यम से लाखों जनजाति बंधुओं में जनजागृति आएगी।

▪ ***रावताराम मेघवाल,*** *रेवदर, सिरोही*

वीरांगना जीजाबाई

देश के स्वर्णिम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखा जाए तो ऐसे वीर-वीरांगनाओं की अनसुनी कहानियां व बलिदान देखने को मिलते हैं जिनकी जीवनी को पढ़कर हमें प्रेरणा मिलती है। वीरांगना जीजाबाई का व्यक्तित्व ऐसा ही था। अपनी दूरदर्शिता के कारण इन्होंने शुरू से ही शिवाजी को अपनी संस्कृति से जोड़े रखा। देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी। आज जिस स्वतंत्रता से हम जी रहे हैं इसकी पृष्ठभूमि में ऐसे ही व्यक्ति थे। हमें अपने इतिहास से सीखने की जरूरत है।

▪ **मोनिका बैरवा**,जयपुर

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- भारतीय अर्थव्यवस्था में डिजिटल क्रांति
https://patheykan.com/?P=21222
- कभी बारिश में बूंदें होकर तुम देखना
https://patheykan.com/?P=21218

तुष्टिकरण की नीति

1 जून के पाथेय कण में जैसलमेर में पाकिस्तान से विस्थापित हिंदू परिवारों के घरों पर चले बुलडोजर के बारे में पढ़कर बहुत दुःख हुआ। एक ओर जहां राज्य सरकार बांग्लादेशी व रोहिंग्याओं को सुख-सुविधाएं उपलब्ध करा रहने के लिए घर तक बना कर दे रही है, वहीं पाकिस्तान से पीड़ित होकर आए हिंदू परिवारों पर क्रूरतापूर्ण व्यवहार अति निंदनीय है।

▪ ***बलवंत सिंह खाराबेरा,****जोधपुर*

संपादकीय

पाथेय कण 16 जून का अंक मिला। संपादकीय पढ़कर लगा कि जो कृत्य राजनीतिक दुराग्रह में दब कर रह गया वो 'अजमेर-92' के माध्यम से लोगों तक पहुँचेगा। हिंदुओं के प्रति जो भूमिका खादिम समुदाय और उनके संरक्षक कांग्रेस के नेताओं की रही, सब के सामने उजागर हो जायेगी। जो लोग इस फिल्म का विरोध कर रहे हैं उनको भी सबक मिलेगा।

▪ ***ओम हरित,****फागी, उदयपुर*

मतांतरण

16 जून का पाथेय कण पढ़ा, अच्छा लगा। शंकराचार्य ने कहा कि "बच्चों को वैदिक सनातन संस्कृति का ज्ञान कराया होता तो आज लव-जिहाद जैसी स्थिति नहीं बनती। इसमें गलती मठ-मंदिरों में बैठे धर्माचार्यों की भी है। केवल माला, तिलक छापा, मूर्ति श्रृंगार-दर्शन, घंटा-घड़ियाल बजाने को ही धर्म मान लिया और उधर विधर्मी दिन-रात सनातन को मिटाने में लगे रहे जिसके परिणाम सबके सामने हैं। भ्रमित, भयभीत हिंदू लालच व भेड़चाल से ईसाई व मुसलमान बन रहे हैं।

▪ ***वेदप्रकाश आर्य,*** *भिर्र,झुंझुनू*

सूचना

अगला अंक होगा विशेषांक (संयुक्तांक)

1 अगस्त को अलग से कोई अंक प्रकाशित नहीं होगा। 1 अगस्त और 16 अगस्त का अंक संयुक्तांक (विशेषांक) के रूप में 16 अगस्त तक प्रकाशित होगा। इसमें विज्ञापन के लिए मोबाइल नं. 9929722111 पर संपर्क करें।

संपादक

नया पाथेय

बहुत पहले श्री बलवीर पुंज महोदय के गरिमापूर्ण आलेख पांचजन्य आदि में पढ़ने को मिलते थे। आज नये पाथेय में, विशाल मनोभाव की बात (16 जून, सेंगोल) पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। कृपया आगे भी ऐसे लेख उपलब्ध कराते रहें। लेख ऐतिहासिक व संग्रहणीय हैं।

▪ ***सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु',*** *कामां,भरतपुर*

हटाया जाना अनुच्छेद 370 का

आज से 4 वर्ष पूर्व 5 अगस्त, 2019 को कश्मीर से हटाई गई थी धारा 370 और 35(ए)। लोग लगभग असंभव ही मानते थे इस कार्य को। परंतु केन्द्र की मोदी-भाजपा सरकार ने इसे कर दिखाया। महबूबा मुफ्ती ने कहा था कि धारा 370 हटा देंगे तो कश्मीर में तिरंगा उठाने वाले दो हाथ भी नहीं मिलेंगे। इन 4 वर्षों में हजारों हाथों ने तिरंगा उठाया। जिस श्रीनगर में तिरंगा फहराने पर आतंकी प्रतिबंध था, वहां स्वाधीनता दिवस का बड़े समारोह हो रहे हैं। आतंकी घटनाओं में 2019 से पूर्व के तीन वर्षों की तुलना में 65 प्रतिशत से भी ज्यादा गिरावट आई है। आतंकवाद के कारण पर्यटन बंद पड़ा था। लोग बेरोजगार हो गए थे। अब प्रतिवर्ष लाखों लोग कश्मीर घूमने जा रहे हैं। गत वर्ष 27 लाख गए थे। श्रीनगर की झेलम में शिकारे चलाने वालों और होटल आदि पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों के चेहरों पर फिर से रौनक लौट आई है। उनकी रोजी-रोटी की फिर से व्यवस्था जो होने लगी। 2019 के बाद जहां 29 हजार से ज्यादा सरकारी नौकरी लोगों को मिली, वहीं 5 लाख से ज्यादा लोग स्वरोजगार से जुड़ चुके हैं।

वर्षों बाद 2018 में पंचायत चुनाव हुए। लोगों ने खुलकर प्रजातंत्र के इस पर्व में भाग लिया। 74 प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ। 2019 में पहली बार ब्लॉक डेवलपमेंट काउंसिल के चुनाव हुए, जिसमें रिकार्ड तोड़ 98.3 प्रतिशत मतदान हुआ। 370 हटने के बाद अलगाववादियों का जनाधार समाप्त होता जा रहा है। 30 से भी ज्यादा अलगाववादी हुर्रियत नेताओं को जेल की सींखचों के पीछे पहुँचा दिया गया है। अलग कश्मीर के लिए काम करने वाले ऐसे 18 हुर्रियत नेताओं को तत्कालीन सरकार ने न केवल मकान व सुरक्षा प्रदान कर रखी थी, बल्कि दिल्ली आने पर उनको पाँच सितारा होटलों में सरकारी खर्चे पर ठहराया जाता था। अब उनकी सुरक्षा व सुविधाओं को वापस ले लिया गया है। अलगाववादियों के 82 बैंक खातों में लेनदेन पर रोक लगा दी गई है। परिणामत: आतंकी घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आने के कारण कश्मीर घाटी में शांति और सुरक्षा का नया वातावरण बना है।

जम्मू-कश्मीर में दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल की तर्ज पर दो एम्स बनाए जा रहे हैं। वर्षों से लंबित श्रीनगर का रामबाग फ्लाईओवर खोला गया है। विश्व की सबसे बड़ी हाईवे सुरंग (9.02 किमी लम्बी) 'अटल टनल' का निर्माण पूरा हो गया है। 40 वर्षों से रुकी हुई शाहपुरकंडी बांध परियोजना जैसी कई परियोजनाओं पर फिर से काम आरंभ किया गया है। विकास की 20 परियोजनाएं तो पूरी भी हो चुकी हैं। जम्मू-कश्मीर के विकास का नया युग शुरू हुआ है। गांव-गांव में बिजली पहुँच रही है, सड़कें बन रही हैं। पुलवामा पहले दहशतगर्दी का प्रतीक बन गया था। पुलवामा का उक्खू गांव अब पेंसिल-स्लेट बना कर पूरे देश को भेज रहा है। देश के अन्य प्रांतों के भारतवासी जम्मू-कश्मीर में जमीन खरीदने की सोच भी नहीं सकते थे। वहां की सरकार ने ही यह प्रतिबंध लगा रखा था। अब अनेक ऐसे लोगों ने वहां जमीनें खरीद कर व्यवसाय, उद्योग आदि आरंभ कर दिए हैं तथा कश्मीर की प्रगति में सहयोगी बन रहे हैं।

पिछले दिनों विश्व के प्रमुख 20 देशों के संगठन 'जी-20' की बैठक श्रीनगर में सम्पन्न हुई। इसके कारण पूरा विश्व जम्मू-कश्मीर में आई शांति और विकास की धारा से परिचित हुआ है। पाकिस्तान, चीन व कुछ मुस्लिम देशों के बहिष्कार के बावजूद 17 देशों के 60 प्रतिनिधि जम्मू-कश्मीर पहुँचे थे। उनका पारंपरिक वेशभूषा में कश्मीरी युवतियों ने पगड़ी, तिलक और फूलों से स्वागत किया। जम्मू-कश्मीर पर केन्द्र के कानून लागू नहीं होते थे। अब केन्द्र के सभी कानून अन्य राज्यों की तरह ही वहां भी लागू हो रहे हैं। पहले यदि वहां की कोई महिला भारत के किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से शादी कर लेती थी तो उस महिला का 'मूल निवासी' का दर्जा छिन जाता था। अब यह नियम हटा दिया गया है।

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस 'एक देश, एक विधान, एक प्रधान' के संकल्प के लिए अपनी जान दे दी थी, आज उनका संकल्प व्यवहारिक रूप ले चुका है। आज जम्मू-कश्मीर में अलग संविधान नहीं है। वहां भारत का संविधान पूरी तरह से लागू हो चुका है। 1990 में कश्मीर घाटी से भगाए गए कश्मीरी पंडितों को फिर से बसाने के लिए 6 हजार नौकरियों सहित हजारों मकानों का निर्माण कार्य चल रहा है। बचे-खुचे आतंकी और पाकिस्तानी कश्मीर लौट रहे हिंदुओं में भय पैदा करना चाहते हैं, परंतु वे सफल नहीं होंगे।

धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला जम्मू-कश्मीर अब देश के बाकी हिस्सों के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ गया है। केसर की क्यारियों और सेबों के बगीचों में नई बहार आ गई है। शाह फैसल, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में 6 अन्य लोगों के साथ याचिका दाखिल की थी, ने अपनी याचिका वापस ले ली है। वे अब कह रहे हैं- ''मेरे जैसे कई कश्मीरियों के लिए 370 अतीत की बात है। अब इसे वापस नहीं लिया जा सकता, केवल आगे बढ़ना है।'' •

-रामस्वरूप अग्रवाल

पाक्षिक
पाथेय कण

श्रावण (शु.) कृष्ण 14 से
श्रावण (अ.) शुक्ल 13 तक
विक्रम संवत् 2080,
युगाब्द 5125
16-31 जुलाई, 2023
वर्ष : 39
अंक : 07

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश
श्याम सिंह

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें- व्हाट्सएप से
79765 82011

फोन से
94136 45211
99297 22111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

समाज को बाँटती है कट्टर व मतांध शासकों एवं आक्रांताओं को नायक मानने की प्रवृत्ति

■ प्रणय कुमार

महाराष्ट्र में औरंगजेब और टीपू सुल्तान को लेकर चल रहा तनाव एवं संघर्ष थमने का नाम नहीं ले रहा है। अहमदनगर, कोल्हापुर, नवी मुंबई, बीड़, नासिक के बाद अब लातूर में भी सोशल मीडिया पर औरंगजेब की तस्वीर को स्टेटस में लगाकर रखने की बात सामने आई है। कट्टर व मतांध शासकों एवं मजहबी आक्रांताओं पर गर्व करने की बात कोई नई नहीं है। अच्छा होता कि भारत का उदार एवं प्रबुद्ध मुस्लिम समाज एवं नेतृत्व ऐसे चरित्रों एवं चेहरों को इतिहास में दफन करके उन पर गर्व करने की मनोवृत्ति एवं मानसिकता पर अंकुश व विराम लगाता।

मजहबी कट्टरता की राजनीति करने वाले राजनीतिक दल, संगठन एवं कुफ्र-काफिर दर्शन में विश्वास रखने वाले तमाम उलेमा-मौलवी एवं उनके अनुयायी, जहाँ आक्रांताओं को नायक की तरह पेश करते हैं, वहीं दूसरी ओर देश के अधिसंख्य जन इन्हें खलनायक की तरह देखते हैं।

यह दृष्टि या धारणा रातों-रात नहीं बनती, अपितु उसके पीछे उस समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक जड़ों, परंपराओं, जीवन-मूल्यों, जीवनादर्शों से लेकर संघर्ष-सहयोग, सुख-दु:ख, जय-पराजय, गौरव-अपमान आदि की साझी अनुभूतियों के साथ-साथ, उस शासक द्वारा प्रजा के हिताहित में किए गए कार्यों की भी महती भूमिका होती है।

मजहबी मानसिकता से ग्रसित कट्टरपंथी लोग, क्षद्म पंथनिरपेक्षतावादी बुद्धिजीवी एवं कथित इतिहासकार मुस्लिम आक्रांताओं को लेकर भले ही कुछ भिन्न दावा करें, परंतु आम धारणा यही है कि ये सभी क्रूर, बर्बर, मतांध, अत्याचारी एवं आततायी थे। ऐतिहासिक साक्ष्य एवं विवरण भी इसकी पुष्टि करते हैं।

मुहम्मद बिन कासिम, गजनी, गौरी, खिलजी, तैमूर, नादिर, अब्दाली आदि विदेशी आक्रांता थे। उनका हृदय भारत और भारतीयों से अधिक, जहाँ से वे आए थे, वहाँ के लिए धड़कता था। उन्होंने भारत से लूटे गए धन का बड़ा हिस्सा समरकंद, खुरासान, दमिश्क, बगदाद, मक्का-मदीना जैसे शहरों एवं वहाँ के विभिन्न घरानों एवं इस्लामिक खलीफा आदि पर खर्च किया।

जिस तैमूर ने तत्कालीन विश्व की लगभग 5 प्रतिशत आबादी का कत्लेआम किया, जिसने दिल्ली में लाखों निर्दोष हिंदुओं

सच्चाई तो यह है कि बाबर भारत और भारतीयों से इतनी घृणा करता था कि मरने के बाद उसने स्वयं को भारत से बाहर दफनाए जाने की इच्छा प्रकट की थी।

का अकारण खून बहाया, भारत आने के पीछे उनका कोई महान उद्देश्य न होकर लूट-खसोट की भावना ही प्रबल थी। बल्कि सच्चाई तो यह है कि बाबर भारत और भारतीयों से इतनी घृणा करता था कि मरने के बाद उसने स्वयं को भारत से बाहर दफनाए जाने की इच्छा प्रकट की थी। अधिकांश मुगल बादशाह अत्यंत व्यसनी, विलासी एवं मतांध रहे। नैतिकता, चारित्रिक शुचिता एवं आदर्श जीवन-मूल्यों के पालन आदि की कसौटी पर वे भारत के परंपरागत राजाओं की तुलना में पासंग भी नहीं ठहरते।

उन्होंने बहुसंख्यकों पर बहुत जुल्म ढाए। उनके शासन-काल में मठों एवं मंदिरों को व्यापक पैमाने पर ध्वंस कराया गया, भगवान के विग्रह तोड़े गए, पुस्तकालय जलाया गया। कथित गंगा-जमुनी तहजीब के पैरोकार एवं पंथनिरपेक्षता के झंडाबरदार अकबर को महानतम शासक बताते नहीं थकते, पर वे यह नहीं बताते कि उसने चितौड़ का दुर्ग जीतने के बाद वहाँ उपस्थित 40 हजार नि:शस्त्र एवं निर्दोष हिंदुओं को मौत के घाट उतरवा दिया था।

अकबर के हरम में हजारों स्त्रियाँ बंदी बनाकर जबरन लाई जाती थीं और वे असहनीय यातनाएँ एवं कलहपूर्ण स्थितियाँ झेलने को अभिशप्त होती थीं।

उनके हरम में हजारों स्त्रियाँ बंदी बनाकर जबरन लाई जाती थीं और वे असहनीय यातनाएँ एवं कलहपूर्ण स्थितियाँ झेलने को अभिशप्त होती थीं।

मुगलों के काल में कला, वास्तु, स्थापत्य, भवन-निर्माण आदि के विकास का यशोगायन करते समय इस तथ्य की नितांत उपेक्षा कर दी जाती है कि जहाँ से वे आए थे, उन क्षेत्रों में कला या निर्माण के ऐसे एक भी तत्कालीन नमूने या उदाहरण देखने को नहीं मिलते। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि जिन्हें हम मुगलों की देन कहते नहीं थकते, दरअसल वे भारत के शिल्पकारों, वास्तुविदों, कारीगरों, कलाकारों की पारंपरिक एवं मौलिक दृष्टि, खोज व कुशलता के परिणाम हैं?

औरंगजेब की मतांधता

जहाँ तक औरंगजेब की कट्टरता एवं मतांधता की बात है तो उसे दर्शाने के लिए

9 अप्रैल, 1669 को उसके द्वारा जारी राज्यादेश पर्याप्त है, जिसमें उसने सभी हिंदू मंदिरों एवं शिक्षा-केंद्रों को नष्ट करने के आदेश दिए थे। इस आदेश को काशी-मथुरा समेत उसकी सल्तनत के सभी 21 सूबों में लागू किया गया था। औरंगजेब के इस आदेश का जिक्र उसके दरबारी लेखक मुहम्मद साफी मुस्तइद्दखां ने अपनी किताब 'मआसिर-ए-आलमगीरी' में भी किया है।

> **मुहम्मद बिन कासिम, गजनी, गौरी, खिलजी, तैमूर, नादिर, अब्दाली आदि विदेशी आक्रांता थे। उनका हृदय भारत और भारतीयों से अधिक, जहाँ से वे आए थे, वहाँ के लिए धड़कता था। उन्होंने भारत से लूटे गए धन का बड़ा हिस्सा समरकंद, खुरासान, दमिश्क, बगदाद, मक्का-मदीना जैसे शहरों एवं वहाँ के विभिन्न घरानों एवं इस्लामिक खलीफा आदि पर खर्च किया।**

इस आदेश के बाद गुजरात का सोमनाथ मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवदेव मंदिर, अहमदाबाद का चिंतामणि मंदिर, बीजापुर का मंदिर, वडनगर का हथेश्वर मंदिर, उदयपुर में झीलों के किनारे बने 3 मंदिर, उज्जैन के आसपास के मंदिर, चितौड़ के 63 मंदिर, सवाईमाधोपुर में मलारना मंदिर, मथुरा में राजा मानसिंह द्वारा 1590 में निर्माण कराए गए गोविंद देव मंदिर समेत देश भर के सैकड़ों छोटे-बड़े मंदिर ध्वस्त करा दिए गए।

1679 ई. में उसने हिंदुओं पर जजिया कर लगा, उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक बनकर जीने को विवश कर दिया। यह अत्यंत अपमानजनक कर होता था, जिसे वे गैर-मुसलमानों से जबरन वसूला करते थे। तलवार या शासन का भय दिखाकर उसने बड़े पैमाने पर हिंदुओं का मतांतरण करवाया। इस्लाम न स्वीकार करने पर उसने निर्दोष एवं निहत्थे हिंदुओं का कत्लेआम करवाने में भी कभी कोई संकोच नहीं किया। मजहबी सोच व सनक में उसने सिख धर्मगुरु तेगबहादुर और उनके तीन अनुयायियों भाई मतिदास, सती दास और दयाल दास को अत्यंत क्रूरता एवं निर्दयता के साथ मार दिया, गुरुगोविंद सिंह जी के साहबजादों को जिंदा दीवार में चिनवा दिया, संभाजी को अमानुषिक यातनाएँ दे-देकर मरवाया।

> **मुस्लिम समाज द्वारा रहीम, रसखान, दारा शिकोह, बहादुर शाह जफर, अशफाक उल्ला खां, खान अब्दुल गफ्फार खान, वीर अब्दुल हमीद एवं एपीजे अब्दुल कलाम जैसे नायकों व चेहरों को सामने रखा जाए तो समाज में भाईचारा बढ़ेगा और टकराव की संभावना भी कम होगी।**

अपने बूढ़े एवं लाचार पिता को कैद में रखने वाला तथा अपने तीन भाइयों दारा, शुजा और मुराद की हत्या कराने वाला व्यक्ति जनसामान्य का आदर्श या नायक नहीं हो सकता!

टीपू सुल्तान द्वारा हिंदू नरसंहार

19 जनवरी, 1790 को बुरदुज जमाउन खान को एक पत्र में टीपू ने स्वयं लिखा है, 'क्या आपको पता है कि हाल ही में मैंने मालाबार पर एक बड़ी जीत दर्ज की है और चार लाख से अधिक हिंदुओं का इस्लाम में कन्वर्जन करवाया है।'

कालीकट के सभी हिंदुओं को मुसलमान बना दिया है।' टीपू ने घोषित तौर पर अपनी तलवार पर खुदवा रखा था -'मेरे मालिक मेरी सहायता कर कि मैं संसार से क़ाफ़िरों (गैर मुसलमानों) को समाप्त कर दूँ।','द मैसूर गजेटियर' के अनुसार टीपू ने लगभग एक हजार मंदिरों का ध्वंस करवाया था। स्वयं टीपू के शब्दों में, 'यदि सारी दुनिया भी मुझे मिल जाए, तब भी मैं हिन्दू मंदिरों को नष्ट करने से नहीं रुकूँगा' (फ्रीडम स्ट्रगल इन केरल)। 1760 से 1790 के कालखंड में उसने कोडागु में 600 से अधिक मंदिरों को नष्ट करवाया।

लाखों लोगों का जबरन मतांतरण करवाने तथा कई हजारों मंदिरों को तोड़ने के मामले में वह दक्षिण का औरंगज़ेब था। इतिहासकार डॉ.चिदानंद मूर्ति के अनुसार मांड्या जिले के मेलकोट के ब्राह्मण आज भी दिवाली नहीं मनाते क्योंकि टीपू ने दीपावली के एक दिन पूर्व वहाँ बड़े पैमाने पर ब्राह्मणों का नरसंहार करवाया था।

आरोप तो यहाँ तक लगते हैं कि उसने अफगान शासक जमान शाह समेत कई विदेशी शासकों को भारत पर आक्रमण हेतु आमंत्रण भी भेजा था।

> **इस्लाम न स्वीकार करने पर औरंगजेब ने निर्दोष एवं निहत्थे हिंदुओं का कत्लेआम करवाने में भी कभी कोई संकोच नहीं किया। मजहबी सोच व सनक में उसने सिख धर्मगुरु तेगबहादुर और उनके तीन अनुयायियों भाई मतिदास, सती दास और दयाल दास को अत्यंत क्रूरता एवं निर्दयता के साथ मार दिया, गुरुगोविंद सिंह जी के साहबजादों को जिंदा दीवार में चिनवा दिया, संभाजी को अमानुषिक यातनाएँ दे-देकर मरवाया।**

इन सबके बावजूद यदि स्वतंत्र भारत में बार-बार औरंगजेब या टीपू सुल्तान को समुदाय विशेष अपने आदर्श या नायक की तरह प्रस्तुत करेगा तो इसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। समरस समाज के लिए 'गजवा-ए-हिंद' जैसे काल्पनिक स्वप्न एवं कट्टरपंथी मानसिकता का परित्याग वर्तमान की आवश्यकता है।

जोर-जबरदस्ती से बहुसंख्यकों के गले उतारने की कोशिशों की बजाय मुस्लिम समाज द्वारा रहीम, रसखान, दारा शिकोह, बहादुर शाह जफर, अशफाक उल्ला खां, खान अब्दुल गफ्फार खान, वीर अब्दुल हमीद एवं एपीजे अब्दुल कलाम जैसे नायकों व चेहरों को सामने रखा जाए तो समाज में भाईचारा बढ़ेगा और टकराव की संभावना भी कम होगी।

अच्छा होता कि भारत का उदार एवं प्रबुद्ध मुस्लिम समाज एवं नेतृत्व ऐसे चरित्रों एवं चेहरों को इतिहास में दफन करके उन पर गर्व करने की मनोवृत्ति एवं मानसिकता पर अंकुश व विराम लगाता। यह सर्वमान्य सत्य है कि भारत में आज जो मुसलमान हैं, उनमें से अधिकांश के पूर्वज भी इन मज़हबी आक्रांताओं, क्रूर एवं कट्टर शासकों के अन्याय-अत्याचार से पीड़ित होकर ही मतांतरित हुए थे। इसे मानने में ही सबकी भलाई है कि मजहब बदलने से पुरखे, मातृभूमि व संस्कृति नहीं बदलती। ■

(लेखक शिक्षाविद एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

भारत-विभाजन नहीं था अनिवार्य
अब नेतृत्व चयन में बरतनी होगी सावधानी

■ दत्तोपंत ठेंगड़ी

- जिन्ना को विश्वास नहीं था कि पाकिस्तान बन जाएगा।
- नेहरू जी ने कहा था- हम थक चुके हैं।
- महात्मा गाँधी ने कहा था- कांग्रेस का नेतृत्व विभाजन स्वीकार कर चुका है। काश! मैं इस नेतृत्व को बदल पाता।

अंग्रेजों का भारत छोड़कर जाना अपरिहार्य हो गया था, किन्तु वास्तव में विभाजन अपरिहार्य नहीं था। कराची में प्रवेश करते समय जिन्ना ने अपने सहकारी (एडीसी) से कहा था, '' मैंने कल्पना तक नहीं की थी कि ऐसा होगा। मुझे आशा नहीं थी कि जीते-जी पाकिस्तान देख सकूंगा।'' डॉ. अम्बेडकर जैसे व्यक्ति ने कहा, '' हमारी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार यह तथ्य कि मुसलमान एक राष्ट्र हैं, राजनीतिक अलगाव को एक सुरक्षित और ठोस नीति बना देता है। दुर्भाग्यवश मुसलमान इस बात को नहीं समझते कि इस नीति के द्वारा मिस्टर जिन्ना ने उनका कितना अपकार किया है...।'' 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' ने भारतीय जनता का देशभक्तिपूर्ण आह्वान किया होता तो देश की अखण्डता बनाये रखने हेतु सर्वोच्च त्याग करने के लिए लाखों की संख्या में लोग आगे बढ़ते।

किन्तु, कांग्रेस का नेतृत्व थक चुका था। जैसा कि पं. जवाहर लाल नेहरू ने 1960 में लेओनार्ड मोस्ले को बताया था, ''सच्चाई यह है कि हम थक चुके थे और आयु भी अधिक हो गयी थी। हम में से कुछ ही लोग फिर से कारावास में जाने की बात कर सकते थे और यदि हम अखण्ड भारत पर डटे रहते, जैसा कि हम चाहते थे, तो स्पष्ट है कि हमें कारागार में जाना ही पड़ता। हमने देखा कि पंजाब में आग भड़क रही है और सुना कि प्रतिदिन मार-काट हो रही है। बँटवारे की योजना ने एक मार्ग निकाला और हमने उसे स्वीकार कर लिया।'' श्री न.वि.गाडगिल ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया, '' देश की मुख्य राजनीतिक शक्ति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी और उसके नेता बूढ़े हो चले थे, थक चुके थे।... वे रस्सी को इतना अधिक नहीं खींचना चाहते थे कि वह टूट जाये और किये-धरे पर पानी फिर जाये।''

कांग्रेस के नेतृत्व ने देश को निराश किया। विभाजन के पूर्व हुई अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में बोलते समय पूज्य महात्मा जी ने कहा- मैं विभाजन का विरोधी हूँ, किन्तु आपको परामर्श देता हूँ कि इसे स्वीकार कर लें क्योंकि आपके नेता इसे स्वीकार कर चुके हैं और हम इस समय इस स्थिति में नहीं हैं कि नेतृत्व को तुरन्त बदल सकें। ''यदि मेरे पास समय होता तो क्या मैं इसका विरोध नहीं करता? किन्तु मैं कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व को चुनौती नहीं दे सकता और उसके प्रति लोगों की आस्था नष्ट नहीं कर सकता। ऐसा मैं तभी करूँगा जब मैं उनसे कह सकूंगा, 'लीजिए, यह रहा वैकल्पिक नेतृत्व'। ऐसे विकल्प के निर्माण का मेरे पास समय नहीं रह गया है।... अत: इस कड़वी औषधि को मुझे पीना ही होगा... आज मुझ में वैसी शक्ति नहीं रही है, अन्यथा तो मैं अकेला ही विद्रोह की घोषणा कर देता।''

पूज्य महात्मा जी ने जिस विवशता का, असहायता का परिचय इस समय दिया, उसी प्रकार की विवशता का अनुभव करने की बारी दुबारा हिन्दुस्तान की लोकशक्ति पर न आये, इसे सतर्कता से देखने की आवश्यकता है।

हिन्दुस्तान की लोकशक्ति सतर्क तथा सक्षम न रही और उसने राजनीतिज्ञों पर अपना अंकुश न लगाया तो हमारा देश दुबारा उसी प्रकार के संकट में फँस सकता है जिस प्रकार के संकट का सामना उसे 1947 में करना पड़ा।

नेतृत्व के चयन के विषय में सावधानी बरतने की आवश्यकता है ताकि दुबारा यह कहने की बारी देशवासियों के ऊपर न आये कि 'इतिहास स्वयं को दोहराता है, यद्यपि ठीक उसी रूप में नहीं।' ऐतिहासिक सत्य के अध्ययन से हम भूतकाल की जैसी भूलों से बच सकते हैं। विभाजन से मिली चेतावनी को समझकर जन-जागरण, जन-शिक्षा तथा जन-संगठन करें और राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित नेतृत्व को आगे बढ़ाएं, यही समय की मांग है।

(स्व.हो.वे.शेषाद्रि द्वारा लिखित पुस्तक '...और देश बंट गया' में श्रीमान् दत्तोपंत जी द्वारा लिखी गई प्रस्तावना 'पुरोवाच' के कुछ अंश)

संगठन ही राष्ट्र की प्रमुख शक्ति होती है। संसार में कोई भी समस्या हल करनी हो तो वह शक्ति-सामर्थ्य के आधार पर ही हो सकती है। शक्तिहीन राष्ट्र की कोई भी आकांक्षा कभी भी सफल नहीं होती। परन्तु सामर्थ्यशाली राष्ट्र कोई भी काम, जब चाहे तब अपनी इच्छानुसार कर सकता है। - डॉ. हेडगेवार

बलिदान दिवस : 26 जुलाई

नेताजी की जान बचाने के लिए अपने पति की हत्या कर दी थी उसने

■ मनोज गर्ग

भारत की स्वतंत्रता के लिए हजारों लोग गुमनाम रहते हुए बलिदान हो गए। ऐसा ही एक नाम है नीरा आर्य का। इन्हें भारत की पहली महिला जासूस होने का गौरव प्राप्त है।

अध्ययन काल के दौरान देशभर में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरणा लेकर वह आजाद हिन्द फौज की रानी झाँसी रेजिमेंट में एक सैनिक के रूप में शामिल हुई। उन्होंने अपनी साथी मानवती आर्य, सरस्वती राजमणि, दुर्गा, बेला और डेनियल काले के साथ मिलकर पुरुष वेश में अंग्रेजों की जासूसी करते हुए कई अभियानों को सफलतापूर्वक पूरा किया। इनकी बहादुरी से खुश होकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने उन्हें रानी झाँसी ब्रिगेड में कैप्टन बनाया।

वर्तमान उत्तर प्रदेश में बागपत जिले के खेकड़ा में 5 मार्च, 1902 को नीरा का जन्म हुआ। हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली के साथ-साथ कई अन्य भाषाओं में नीरा को प्रवीणता प्राप्त थी। नीरा का विवाह ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर विभाग में कार्यरत श्रीकांत जयरंजन दास से हुआ था। विवाह के बाद भी नीरा ने देशभक्ति के पथ को नहीं छोड़ा। उसके पति लगातार क्रांतिकारियों को पकड़ाकर अंग्रेजों के चहेते बने हुए थे। श्रीकांत को अंग्रेजों ने नेताजी की जासूसी करने और मारने की जिम्मेदारी दे रखी थी। जब यह बात नीरा को पता चली तो दोनों में झगड़े प्रारम्भ हुए। यह संघर्ष इतना बढ़ गया कि अब दोनों हर समय एक दूसरे की गतिविधियों पर नजर रखने लगे। एक दिन जब नीरा आजाद हिन्द फौज के बेस कैंप में नेताजी से मिलने जा रही थी तो श्रीकांत भी पीछा करते हुए वहाँ तक पहुँच गया। मौका पाकर उसने नेताजी पर गोली चला दी। संयोग से गोली नेताजी के ड्राइवर को लगी। खतरे को भाँपते हुए नीरा ने देर नहीं की और बंदूक के संगीन (चाकू) को पति के सीने में उतार दिया।

आजाद हिन्द फौज के समर्पण के बाद नीरा आर्य को अपने पति की हत्या के आरोप में काले पानी की सजा दी गई। अंग्रेजों ने उन्हें लालच दिया कि यदि वह आजाद हिन्द फौज के अपने साथियों के नाम और नेताजी का पता बता देगी तो उसे छोड़ दिया जाएगा। परन्तु अंग्रेज उनके मुँह से कुछ उगलवा न सके। सजा के दौरान उन्हें घोर यातनाएं दी गई। काले पानी की सजा के लिए अंडमान भेजने से पूर्व उन्हें कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) की जेल में रखा गया जहां के जेलर ने अमानवीयता व अभद्रता की हदें पार करते हुए उनके स्तन काटने का प्रयास तक किया।

स्वाधीनता के पश्चात् सत्ता में आए लोगों ने अपना सर्वस्व मां भारती के लिए न्यौछावर करने निकले क्रांतिकारियों की कितनी उपेक्षा की, इसका एक उदाहरण नीरा आर्य भी हैं। स्वाधीन भारत में भारत माता की उस बहादुर बेटी को सम्मान देना तो दूर की बात रही, उन्हें अपने जीवन के अंतिम दिनों में हैदराबाद स्थित चारमीनार के पास फूल बेचकर जीवन-यापन करना पड़ा जहां वे एक झोंपड़ी में रहती थीं।

अंतिम दिनों में सरकार ने वह झोंपड़ी भी तोड़ दी क्योंकि वह सरकारी जमीन पर बनी थी। महान क्रांतिकारी नीरा आर्य का देहान्त असहाय, निराश्रित और बीमार वृद्धा की अवस्था में 26 जुलाई, 1998 में हुआ।

कैप्टन नीरा आर्य ने भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष पर अपनी आत्मकथा लिखी थी। इस महान देशभक्त, साहसी और स्वाभिमानी महिला के जीवन पर लेखिका मधु धामा ने उपन्यास लिखा है। नीरा के भाई बसंत कुमार भी आजाद हिन्द फौज में थे। इन दोनों भाई-बहिन पर कई लोक गायकों ने काव्य संग्रह व भजन लिखे। 'नीरा नागिनी' के नाम से एक महाकाव्य भी लिखा गया। हैदराबाद की महिलाएं उनको 'पेदम्मा' कहकर पुकारती थीं।

अब नीरा आर्य के नाम पर एक राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित किए जाने के साथ ही उनकी जन्म स्थली खेकड़ा में स्मारक बनाने की घोषणा हुई है। कन्नड़ फिल्म निर्देशक रूपा अय्यर उनके जीवन पर एक फिल्म बनाने जा रही है। इस फिल्म के माध्यम से भारत के लोग उस महान देशभक्त वीरांगना के बारे में जान पाएंगे। ■

रामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा : कुछ ही दिन शेष

सच होता प्रभु राम के भव्य मंदिर निर्माण का सपना

'ठुमक चलत रामचंद्र, बाजत पैजनियां...' गाकर वात्सल्य भाव से भक्ति में डूबे श्रद्धालु भाव विभोर हो उठेंगे, जब अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर में पांच वर्षीय बालक के स्वरूप में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। जय श्री राम का जयघोष करने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए प्रतीक्षा की घड़ी अब समाप्त होने वाली है। भक्तों के प्रभु श्री राम लला की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में अब कुछ ही दिन शेष रह गए हैं। यह दिन संपूर्ण भारतवर्ष व विश्व के लिए दीपावली के उत्सव जैसा होगा। अपने जीवनकाल में 14 साल के वनवास के बाद जब श्री राम अयोध्या पहुंचे तब पहली दीपावली मनाई गई। अब इस युग में कुछ अतिवादियों के हठ के चलते रामजन्मभूमि मंदिर विवाद ने जन्म लिया और रामलला को 'न्याय' की प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिरकार 9 नवम्बर, 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने भगवान के पक्ष में न्याय किया और मंदिर बनाने के लिए ट्रस्ट को जमीन सौंपने का आदेश दिया। तब से अब तक हर राम भक्त राम लला के भव्य मंदिर में विराजने की प्रतीक्षा कर रहा है। एक बार फिर देश में दीपावली जैसा भव्य उत्सव होगा।

अयोध्या में बन रहे रामलला के भव्य मंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसी क्रम में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन की तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अगस्त, 2020 को एक भव्य समारोह में मंदिर की आधारशिला रखी थी। मुख्य मंदिर के अलावा, परिसर में एक संग्रहालय, डिजिटल अभिलेखागार और एक शोध केंद्र भी होगा। श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव श्री चंपत राय ने बताया कि गर्भ गृह में पांच वर्षीय बालक के स्वरूप में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। इस आयोजन के बाद मंदिर के दूसरे व तीसरे तल का निर्माण कार्य जारी रहेगा। मंदिर भवन की विशेषता यह है कि इसमें कहीं भी लोहे का प्रयोग नहीं किया गया है। पत्थरों को जोड़ने के लिए सीमेंट और रेत के बजाय तांबे की पत्तियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। गर्भ गृह के द्वारों को भी तैयार कर लिया जाएगा। इन द्वारों को सोने से मढ़े जाने की तैयारी है।

मंदिर निर्माण का पहला चरण इस साल दिसम्बर तक पूरा करा लिए जाने की तैयारी है। भव्य मंदिर के पहले तल के निर्माण कार्य को अंतिम रूप दिया जा रहा है। राम मंदिर

डॉक्यूमेंट्री में दिखेगी श्री रामजन्मभूमि की अब तक की यात्रा

अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के इतिहास और आंदोलन से लेकर नए सिरे से शुरू हुए मंदिर के निर्माण तक पर डॉक्यूमेंट्री बनाई जाएगी। इस डॉक्यूमेंट्री के निर्माण की जिम्मेदारी मंदिर ट्रस्ट ने महाराष्ट्र की कंपनी को सौंपी है। इसमें भक्तों के अपने ही भगवान का मंदिर बनाने के लिए किए गए संघर्ष की कहानी को प्रदर्शित किया जाएगा। महाराष्ट्र की एकनाथ सतपुरकर की कंपनी 40 सालों से फिल्म और डॉक्यूमेंट्री का निर्माण कर रही है। अयोध्या के रामनिवास भवन में कंपनी का कार्यालय और स्टूडियो स्थापित है। यहां 4 महीने से राम मंदिर पर डॉक्यूमेंट्री और ऐतिहासिक तथ्य के संग्रह का काम चल रहा है।

कंपनी के संचालक एकनाथ सतपुरकर ने बताया कि राम मंदिर के इतिहास, इसको लेकर चले आंदोलन, पुरातत्व विभाग की जांच, कानूनी लड़ाई और आंदोलन के विभिन्न खास घटनाक्रमों को डॉक्यूमेंट्री में दर्शाया जाएगा। इसके साथ-साथ अयोध्या के मठ-मंदिर की परंपरा, साधु-संतों की जीवन शैली आदि को भी प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 4 माह के बीच 25-30 मठ-मंदिरों के महंतों और संत समाज के प्रमुखों के साक्षात्कार लिए जा चुके हैं। एकनाथ ने बताया कि मंदिर आंदोलन के दौरान रिपोर्टिंग करने वाले मीडियाकर्मियों के भी इंटरव्यू लिए जाएंगे। कानूनी लड़ाई से जुड़े वकीलों के वक्तव्य को भी इसमें जोड़ा जाएगा। उन्होंने बताया कि डॉक्यूमेंट्री का काम 2025 तक पूरा करना है। इसीलिए काम में तेजी लाई जा रही है।

35 विशेषज्ञों की टीम

सतपुरकर ने बताया कि डॉक्यूमेंट्री के निर्माण और जन्मभूमि मंदिर से जुड़े तथ्यों का डॉक्यूमेंटेशन करने में उनकी कंपनी ने 35 टेक्नीशियन और विशेषज्ञों की टीम को लगाया है। इसमें से आधा दर्जन तकनीकी कर्मचारी अयोध्या के कार्यालय पर काम कर रहे हैं। यह कार्य भावी पीढ़ी के लिए राम मंदिर का दस्तावेज बनेगा।

का निर्माण तीन चरणों में होना है। हालांकि, पहले चरण का कार्य पूरा होने के बाद अस्थायी मंदिर में विराजमान रामलला को उनके गर्भगृह में स्थापित कर दिया जाएगा। प्राण प्रतिष्ठा समारोह 15 से 24 जनवरी तक आयोजित किया जाएगा। 24-25 जनवरी से रामलला का दरबार सामान्य भक्तों के लिए खुल जाएगा। रामलला इसके बाद अपने भव्य मंदिर के गर्भगृह से भक्तों को दर्शन देंगे। मंदिर निर्माण के प्रथम चरण में नृत्य मंडप, रंग व गुह्य मंडप पर स्तंभों के निर्माण के लिए आधारभूत ढांचा तैयार किया जा चुका है। दूसरी तरफ भूतल को अब अंतिम रूप दिया जा रहा है।

मकराना के संगमरमर की आपूर्ति हुई तेज

इसी माह भूतल की फर्श पर संगमरमर लगना शुरू हो जाएगा। इसके लिए मकराना के संगमरमर की आपूर्ति तेजी से हो रही है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा ने बताया कि प्रथम तल पर निर्माण शुरू हो गया है। प्रथम तल पर मंडपों की निर्धारित परिधि में ढाई फीट ऊंची पत्थर की दीवार बनाई जा चुकी है। इसी पर स्तंभ खड़े किए जाएंगे। भूतल की तरह ही स्तंभ के एक हिस्से को दूसरे से जोड़कर निर्मित किया जाएगा। मंदिर के तीनों तलों में 360 स्तंभ लगाए जाने हैं। भूतल पर 160 स्तंभ लग चुके हैं। दिसम्बर तक राम मंदिर का भूतल पूरी तरह तैयार होना है, जिसमें दरवाजे, खिड़की तथा बिजली वायरिंग से लेकर फर्श पर संगमरमर लगने हैं। नए वर्ष में मकर संक्रांति के बाद रामलला को भव्य मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित किया जाना है।

पूरे देश का योगदान

राम मंदिर निर्माण में देश के करीब-करीब सभी राज्यों का योगदान है। मंदिर में लगाए जाने वाले पत्थर राजस्थान व कर्नाटक से आए हैं। रामलला की अचल मूर्ति कर्नाटक व राजस्थान के पत्थरों से बन रही है। मंदिर के दरवाजे महाराष्ट्र के सागौन की लकड़ियों से बन रहे हैं। दरवाजे पर नक्काशी का काम कन्याकुमारी के कारीगर कर रहे हैं। मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद इसमें संपूर्ण देश की झलक देखने को मिलेगी। मंदिर ट्रस्ट कार्यालय के प्रभारी प्रकाश कुमार गुप्ता के अनुसार, राम मंदिर निधि समर्पण अभियान में 3400 करोड़ रुपए की राशि जमा हुई है।

प्रवासी भारतीय भी कर पाएंगे दर्शन

अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने की तैयारी की गई है। देश के विभिन्न भागों में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किए जाने की तैयारी पहले से जारी है। इस मौके पर देश के तमाम मंदिरों में विशेष आयोजन किए जाएंगे। वहीं, विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास में भी राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस प्रकार प्रवासी भारतीय रामलला का दर्शन कर पाएंगे।

भक्तों की पुकार सुन कर दौड़े चले आने वाले प्रभु श्री राम के अयोध्या जन्मभूमि स्थित मंदिर में दर्शन के लिए हम सब पलक-पांवड़े बिछाकर प्रतीक्षा कर रहे हैं। (हेमा)

पुण्यतिथि : 11 अगस्त

क्रांतिकारी खुदीराम बोस

ब्रिटिश राज के विरुद्ध पर्चे बाँटने के आरोप में 15 वर्ष की उम्र में पहली बार गिरफ्तार हुए थे खुदीराम बोस। क्रांतिकारी संगठन 'अनुशीलन समिति' का सदस्य बन कम उम्र में बम बनाना सीखा। उन दिनों मुजफ्फरपुर (बिहार) के अंग्रेज मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड द्वारा छोटी-छोटी बातों पर भारतीयों को कड़ी से कड़ी सजा देने के कारण क्रांतिकारियों ने उससे बदला लेने का निर्णय लिया था। खुदीराम व प्रफुल्ल चाकी को यह अभियान पूरा करने का जिम्मा संगठन से मिला। मुजफ्फरपुर में वे किंग्सफोर्ड की दैनिक गतिविधियों पर नजर रखने लगे। कोर्ट आते समय बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात रहता था इसलिए वहाँ मारना मुश्किल लगा तो उन्होंने उसे 'यूरोपियन क्लब' जहाँ वह हर शाम को जाता था, से निकलते वक्त मारने की योजना बनाई। देर रात जैसे ही लाल बग्घी क्लब से निकली खुदीराम व प्रफुल्ल तुरंत चलती बग्गी पर चढ़े और बम गिराकर फरार हो गए। संयोग से उस दिन बग्घी में डगलस की जगह उसकी पत्नी और बैरिस्टर कैनेडी की बेटी थी जो अब यमलोक पहुँच चुकी थी। आग की तरह खबर पूरे शहर में फैल चुकी थी। शहर के सभी रास्तों पर नाका-बंदी कर पुलिस बल तैनात कर दिया गया।

प्रफुल्ल किसी तरह कलकत्ता की ट्रेन में बैठ चुका था। लेकिन जब उसे पता चला कि स्टेशन पर पुलिस गिरफ्तार करने के लिए तैयार खड़ी है तो उसने अपने आप को गोली मार कर मृत्यु का वरण किया। दूसरी ओर खुदीराम अत्यधिक थकान के कारण एक स्थान पर पानी पीने के लिए रुका तो वहां पहले से बैठे दो हवलदारों को उसके ऊपर संदेह हो गया और पूछताछ के बहाने गिरफ्तार कर लिया तभी उन्हें पता चला कि डगलस तो बच गया और उसके स्थान पर दो महिलाएं मारी गई। खुदीराम को मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया गया। जहाँ उन्होंने हँसते हुए उक्त घटना की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। मुकदमे की सुनवाई का नाटक रचा गया और 11 अगस्त, 1908 को मात्र 18 साल के इस युवक को फाँसी का पुरस्कार मिला।

खुदीराम के बलिदान ने जनमानस के हृदय में इतना व्यापक स्थान बनाया कि स्कूल-कॉलेज के युवा 'खुदीराम' लिखी धोती पहनकर स्वतंत्रता की राह पर चल पड़े। 'मैं खुदीराम बोस हूँ' (वर्ष 2017) तथा खुदीराम बोस (वर्ष 2022) उनकी क्रांति यात्रा पर बनी सफल प्रेरणादायी फिल्में हैं। मुजफ्फरपुर जेल, जहां उन्हें फांसी दी गई थी बाद में उसका नाम बदलकर 'खुदीराम बोस मेमोरियल सेंट्रल जेल' कर उनकी स्मृति को जीवंत बनाया गया है। **खुदीराम कहा करते थे, '' क्या गुलामी से बड़ी और कोई दूसरी बीमारी हो सकती है।''**

(मनोज)

फ्रांस में नाबालिग की मौत के बाद सड़कों पर उपद्रव, आगजनी

विश्व के लिए मुसीबत बनते मुस्लिम शरणार्थी

■ हेमलता चतुर्वेदी

फ्रांस में अफ्रीकी मूल के एक मुस्लिम नाबालिग लड़के नाहेल की पुलिस फायरिंग में हुई मौत पर वहां अल्पसंख्यक मुसलमानों ने दंगे कर दिए। सोशल मीडिया पर 'फ्रांस जल रहा है' जैसे वीडियो वायरल हो गए। दंगाईयों में ज्यादातर शरणार्थी मुसलमान हैं, जो मौका पाकर सड़कों पर उत्पात मचाए हुए हैं, सुपरमार्केट से सामान लूट कर ले जा रहे हैं, पुलिस की गाड़ियों से हथियार लूट रहे हैं। हद तो तब हो गई जब विरोध के नाम पर इन प्रदर्शकारियों ने सार्वजनिक पुस्तकालय को आग लगा दी। काश! फ्रांस इन मुसलमानों को शरण ही नहीं देता। न इन्हें जीवनयापन के लिए सरजमीं मिलती और न ही ये लोग अपने शरणदाता के खिलाफ सिर उठाते।

पोलैंड समेत कई यूरोपीय देश इसके लिए फ्रांस की उदारवादी विदेश नीति को दोषी ठहरा रहे हैं। कुछ का कहना है कि सस्ते मजदूरों और वोटो के लालच में फ्रांस ने इन शरणार्थियों के प्रति उदारवादी रवैया अपनाया और आज इसी की कीमत उसे चुकानी पड़ रही है। देखने में आता है कि मुसलमान जिस देश में शरणार्थी बन कर जाते हैं, वहां के कोई नियम कानून नहीं मानते, बस मनमानी करते हैं। यह तथ्य उस वक्त और पुख्ता हो जाता है, जब दंगाई अफ्रीकी मुस्लिम महिलाएं सड़कों पर पुलिस का विरोध करती हैं और उन्हें खदेड़ने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़ते हैं। 29 जून को तोड़फोड़ और आगजनी के आरोप में गिरफ्तार एक युवक से जब पुलिस ने पूछा कि वह उपद्रव में क्यों शामिल था तो उसका जवाब था-''नाहेल को न्याय दिलाने के लिए'' स्पष्ट है एक मुस्लिम लड़के को न्याय दिलवाने के लिए ये विरोधी पूरे देश में कानून-व्यवस्था खराब कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि नाहेल की मौत पुलिस की गोली लगने से नहीं हुई। पुलिस ने गोली अवश्य चलाई थी परंतु पुलिस से बचने के लिए उसने कार को तेजी से दौड़ाया, जो आगे जाकर तेज गति के कारण डिवाइडर से टकरा कर पलट गई, वहीं उसने दम तोड़ दिया।

मतलब जिस हवाले से फ्रांस की सड़कों पर उत्पात मचाया जा रहा है कि पुलिस ने एक अश्वेत को गोली मार कर हत्या कर दी, वह सच ही नहीं है। फ्रांस में एक के बाद एक मुस्लिम दंगों को देखते हुए यूरोप के बाकी देश चिंतित हैं कि कहीं इसी तरह की हिंसा उनके देश में न हो जाए, इसीलिए आज फ्रांस की तुलना पोलैंड से हो रही है, जिसने मुस्लिम आव्रजकों को रोकने के लिए दीवार ही खड़ी कर दी।

पोलैंड के प्रधानमंत्री माटरूज मोआविएकी का एक ट्वीट सामने आया है कि-''हमारी योजना एक सुरक्षित यूरोप और नागरिकों की रक्षा की है। यूरोप में पोलैंड एक ऐसा देश है, जिसमें एक भी मुस्लिम शरणार्थी नहीं है। पोलैंड के एक नेता डोमिनिक टार्जिस्की ने एक इंटरव्यू में दावा किया था-''पोलैंड ने 'जीरो मुस्लिम शरणार्थी नीति' अपनाई। हालांकि यहां 20 लाख यूक्रेनी शरणार्थी रह रहे हैं लेकिन एक भी मुस्लिम न होने के कारण यहां शांति है। पोलैंड में न तो कोई आतंकी हमला हुआ न दंगा। क्या अब भी यह समझना बाकी है कि कौन विश्व में कई जगह आतंकी घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं और इनके अनैतिक कृत्य लगातार जारी हैं।

नीदरलैंड के दक्षिणपंथी सांसद गिर विल्डर्स ने भी फ्रांस के हालात के लिए मुसलमानों को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा-''अगर आप जिहाद का आयात करेंगे तो हैरान मत होइए कि आप खिलाफत बन जाएं।'' उन्होंने फ्रांस में लूट की तस्वीरों व वीडियो पर कटाक्ष करते हुए लिखा 'बहुसंस्कृतिवादी लूट'। दरअसल वे फ्रांस व अमरीका की ''बहुसंस्कृतिवाद'' नीति पर

फ्रांस में योगी की मांग

फ्रांस में भड़की हिंसा के दौरान वहीं के एक प्रोफेसर एन जॉन केम ने ट्वीट किया ''यहां दंगे नियंत्रित करने और हालात पर काबू पाने के लिए योगी आदित्यनाथ को भेजिए। ओह माय गॉड! वे 24 घंटे में एक्शन लेकर सब कुछ सामान्य कर देंगे।'' उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को टैग कर लिखे गए इस ट्वीट का जवाब योगी के ऑफिस से यह आया- ''जब भी दुनिया के किसी हिस्से में दंगा भड़कता है,कानून-व्यवस्था बदहाल होती है तो दुनिया योगी मॉडल की मांग करती है। इसी मॉडल के दम पर उन्होंने उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था बहाल की है।''

कनाडा में खालिस्तान समर्थक और भारतीय आमने-सामने

ब्रिटेन में भारत विरोधी रैली में नहीं जुटी भीड़

टोरंटो। कनाडा स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के बाहर खालिस्तानी प्रदर्शनकारियों ने झंडे लहराए और नारे लगाए। इसके जवाब में भारतीय समुदाय के लोग भी तिरंगा लेकर वहां मौजूद रहे।

भारत माता की जय और वंदेमातरम् के नारे लगाते हुए हाथ में 'खालिस्तानी सिख नहीं होते' लिखी तख्ती लिए भारतवंशियों के प्रदर्शन और नारेबाजी के आगे खालिस्तानियों की रैली फीकी पड़ गई।

प्रदर्शन के दौरान दोनों पक्षों के समर्थक आमने-सामने नजर आए। बताया जाता है कि खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद खालिस्तानी समर्थकों ने 8 जुलाई को अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा में रैली निकालने की घोषणा की थी।

खालिस्तान समर्थकों को अब विदेश में नहीं मिलता समर्थन

खालिस्तान के नारे लगाते हुए भारत में अलग देश की मांग करने वाले खालिस्तानी समर्थकों को अब विदेशों में मिलने वाला समर्थन कम होने लगा है। इसका कारण भारत सरकार की तरफ से बनाया जा रहा दबाव और खालिस्तानी समर्थकों की तरफ से भारतीय दूतावासों व राजनयिकों को नुकसान पहुंचाने की धमकी है।

इसके बाद से अब कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश भी पीछे हटना शुरू हो गए हैं। सभी देशों के विदेश मंत्रालय स्पष्ट कह चुके हैं कि वे अपनी धरती पर आतंकवादी गतिविधियों को अनुमति नहीं देंगे।

कटाक्ष कर रहे थे।

कुछ लोगों ने फ्रांस में दंगाईयों द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालय जलाने की घटना की तुलना भारत के नालंदा विश्वविद्यालय को जलाने से की है। यह मात्र संयोग नहीं है कि इस विश्वविद्यालय का जलाने वाला भी मुस्लिम ही था। 1199 में आक्रांता बख्तियार खिलजी ने यह कृत्य किया।

फ्रांस की घटना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंताजनक बन चुकी है। इसका कारण यही है कि फ्रांस ने जिन मुसलमानों को पीड़ित व शोषित मान कर शरण दी थी, अब वे ही उसके अस्तित्व के लिए खतरा बन गए हैं। फ्रांस ने इन प्रवासियों को बगैर यह जांचे यहां रहने दिया कि इनमें से कुछ मुस्लिम शरणार्थी ऐसे भी थे, जिन्हें खुद उनके देश की सरकारें जेलों में डालने को तैयार थीं। फ्रांस को यूरोप का पहला इस्लामिक राष्ट्र बनाने का दावा करने वाले इन दंगाईयों से यह पूछा जाना चाहिए कि कभी खाली हाथ शरण मांग कर यहां बसे इन शरणार्थियों के पास स्वचालित मशीन गन व आधुनिक हथियार कहां से आ जाते हैं? •

अमेरिका में दस हजार लोगों ने

एक साथ किया गीता पाठ

गीता का संदेश देश ही नहीं विदेश में भी बड़ी रुचि और श्रद्धा के साथ सुना और पढ़ा जाने लगा है।

गई गुरु पूर्णिमा (3 जुलाई) के अवसर पर ऐसा ही एक कार्यक्रम अमेरिका के टेक्सास स्थित एलन ईस्ट में हुआ जहाँ दस हजार लोगों ने एक साथ गीता का पाठ किया।

कार्यक्रम में 4 वर्ष से लेकर 84 वर्ष की उम्र के लोग शामिल थे। कार्यक्रम का आयोजन एसजीएस गीता फाउंडेशन व योग संगीता की ओर से आध्यात्मिक संत गणपति सच्चिदानंद जी महाराज की उपस्थिति में हुआ।

गतांक से आगे...

गौ-आधारित जैविक खेती ही क्यों ? भाग-4

जैविक कृषि के आवश्यक सिद्धान्त

■ **बद्रीनारायण चौधरी**
-राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ

भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य ह्यूमस के द्वारा किया जाता है। जितना ह्यूमस का निर्माण होगा, उतना ही उत्पादन बढ़ जाएगा। पौधे के पत्तों को वर्गफुट में जमाएं तो प्रति वर्गफुट पत्ते एक दिन में 4-5 ग्राम कच्ची शर्करा तैयार करते हैं। इसमें से फूल-फल-पत्तियों की श्वसन क्रिया एवं क्लोरोफिल पौधों के लिए खाना तैयार करने में खर्च होती हैं। 25 प्रतिशत शर्करा जड़ों के माध्यम से सूक्ष्म जीवाणुओं को दी जाती है, जिसके लिए लालायित जीवाणु पौधों की जड़ों को सभी वांछित पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। शेष रह जाती है तो वह तना एवं टहनियों में जमा कर दी जाती है।

ह्यूमस का गठन-

मुख्यत: दो तत्व 1- जैविक कार्बन और 2- जैविक नाइट्रोजन से होता है। जैविक कार्बन पौधों की पत्तियों-टहनियों से उत्पन्न होता है। हवा में उपलब्ध 78 प्रतिशत नाइट्रोजन जीवाणु-नत्राणू के द्वारा पकड़ कर जड़ों के माध्यम से पत्तियों तक भेजा जाता है। इसलिए खेत में गिरने वाले पत्तों में नाइट्रोजन की मात्रा भी मौजूद रहती है।

इन पत्तों में 60 प्रतिशत जैविक कार्बन और 6 प्रतिशत जैविक नाइट्रोजन होने के कारण 1 किलो नाइट्रोजन 10 किलो कार्बन पौधों को देता है या यो कहें कि ह्यूमस निर्माण में प्रयुक्त होता है। इसी को वैज्ञानिक भाषा में सीएन रेटिओ कहा जाता है। इसके लिए एक दलीय फसलों (यथा-जौ, गेंहू, मक्का, ज्वार, बाजरा, धान, गन्ना, घास प्रजाति) के अवशिष्ट पदार्थों का आच्छादन (मल्चिंग) करने से यह सीएन रेटिओ उपलब्ध होता है। कच्ची फसलों के अवशिष्ट में यही अनुपात 80:1 रह जाता है, तब 1 किलो नाइट्रोजन मात्रा 1 किलो कार्बन को ही रोक सकेगा। शेष 70 प्रतिशत कार्बन वायुमण्डल का तापमान 35 डिग्री से ऊपर होते ही ऑक्सीजन से क्रिया करके कार्बनडाई ऑक्साइड बन कर उड़ जाता है। जो ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने का काम करती हैं। ओजोन परत के लिए हानिकारक है। इसलिए पके हुए पौधों का अवशिष्ट ही काम में लिया जाए।

जैविक कृषि के आवश्यक सिद्धान्त

1. जीवाणुओं को मारने वाली दवाइयाँ, रासायनिक खाद का प्रयोग बंद किया जाएं।

2. पशु एवं कृषि अवशिष्ट को जलाया नहीं जाए, बल्कि बीज बोने के समय या बाद में खेत को ढकने के काम में लेना चाहिए। यह पानी का वाष्पीकरण होकर उड़ने से रोकेगा। सूक्ष्म जीवाणुओं का आश्रय स्थल, ह्यूमस तैयार होगा। पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ने से यह वाष्प बनकर जड़ों के माध्यम से पौधे में अवशोषित होगा। केंचुआ ऊपरी सतह पर आने लगेगा। कचरा स्वयं डालकर मिट्टी में मिल जायेगा। जो ह्यूमस एवं कार्बन निर्माण में सहायक होगा।

3. मिश्रित खेती- मोनो क्रॉपिंग (एक ही फसल) से बचना और बीच-बीच में दूसरी फसलों को भी बोना। खाद्यान्न फसलों के साथ दलहन फसलें बोने से, दलहन फसलों की जड़े नाइट्रोजन दूसरी फसलों को देगी। इसी प्रकार सभी फसलें पूरक बनकर एक-दूजे के लिए पोषक तत्वों की पूर्ति का कार्य करती हैं। हमारे यहाँ पहले मूंगफली के बीच में अरहर बोते थे, गेंहू+चना मिलाकर गुंचणी और जौ+चना मिलाकर बेजड़ की फसल करते ही थे। यही मिश्रित अन्न खाने से मोटे अनाज का आहार, मिस्सी रोटी, दाल-रोटी साथ-साथ मिल जाती थी।

4. फसल चक्र - एक ही फसल बार-बार नहीं बोनी चाहिए। बदल-बदल कर फसलें बोनी चाहिए। मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट नहीं होती। चावल के खेत में लगातार चावल, गेहूँ भी लगातार, सरसों-हर वर्ष यह मोनोकॉपिंग मिट्टी के लिए हानिकारक है।

5. खेत में पक्षियों के बैठने की सुविधा बढ़ाना। मेड़ पर पेड़ होने से उनका बायोमास भी मिलेगा। कम धूप वाली फसलें उनके बीच की जा सकेगी। पक्षी हानिकारक कीटों को खाना पसंद करते हैं, इसलिए उनका आश्रम स्थल भी तैयार होगा। शाकाहारी कीट फसल खाते हैं, पक्षी उनको खाते है।

जब रोग कारक कीट खेत में नही रहेंगे तो खेतों को धूप में तपाना आवश्यक नहीं होता, लगातार नमी+मल्च रहने से सूक्ष्म जीव निरन्तर सक्रिय बने रहते हैं। जिस प्रकार जंगल में कोई ट्रैक्टर नहीं, वैसे ही फसल काटकर उसके अवशिष्ट को एकत्र करना, दूसरे बीज बोना और पुन: अवशिष्ट से क्यारी को ढक देना, लगातार करते जाना, इससे वर्ष में 2-3-4 फसलें भी ली जा सकती हैं। जिनके पास छोटे-छोटे खेतों के टुकड़े रह गये, उनके लिए तो यह प्रयोग वरदान सिद्ध हो रहा है। **क्रमश:**

समरस होते समाज के पाँच प्रेरक परिदृश्य

बांसवाड़ा

वाल्मीकि समाज की प्रतिभाओं के सम्मान में स्नेह भोज

कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले वाल्मीकि समाज के 15 प्रतिभावान विद्यार्थियों का बीते दिनों विद्या भारती, बांसवाड़ा के सेवा विभाग द्वारा सम्मान व स्नेह भोज का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में प्रतिभावान बच्चों के साथ-साथ चित्रकारी, खेल जगत, सामाजिक क्षेत्र, गौ-सेवा आदि क्षेत्रों में कार्य कर रहे लोगों का भी अभिनंदन किया गया। बड़ा रामद्वारा के संत रामप्रकाश जी महाराज ने बाबा साहब अम्बेडकर के विचारों से समाज बंधुओं को अवगत कराया। कार्यक्रम में उपस्थित 350 माता-बहिनों और पुरुषों को व्यसन मुक्ति का संकल्प दिलाने के पश्चात् सभी स्नेह भोज में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय रामदेव बस्ती के गौ-चिकित्सालय में रखा गया था।

तिंवरी (जोधपुर)

500 बच्चों ने भरा 51 हजार का मायरा

कहते हैं कि नेक काम करने की कोई उम्र नहीं होती। इसी का ताजा उदाहरण है तिंवरी का शहीदे आजम भगत सिंह उ.मा.विद्यालय। जहां अध्ययनरत 500 विद्यार्थियों को जब यह सूचना दी गई कि शांति नगर की कोयली देवी (85) पोती माया के विवाह को लेकर चिंतित है। दरअसल माया के माता-पिता का 5 वर्ष पूर्व बीमारी से निधन हो गया था। चारों बच्चों का लालन-पालन दादी ने वृद्धावस्था पेंशन से किया। ऐसे में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों ने विद्यालय स्टाफ की मदद से 51 हजार रुपये इकट्ठे कर निर्धन बिटिया का मायरा भर भली प्रकार से विवाह सम्पन्न करवाया। माया की बहन ने सभी विद्यार्थियों

को भाई मानकर तिलक लगाया और बधावणा की रस्म अदा की। साथ ही स्कूल के बच्चों ने माया को नव गृहस्थी का सामान भी उपलब्ध करवाया। जानकारी हो कि विद्यालय के बच्चों द्वारा पिछले 9 वर्षों में समाज में चल रहे सेवा कार्यों में 32 लाख रुपयों का सहयोग किया गया है। इसके साथ ही नवाचार को लेकर भी यह विद्यालय काफी चर्चित रहा है।

झालावाड़

गौशाला समिति ने किया अनाथ लड़कियों का कन्यादान

माथनिया निवासी दो बहनें पूजा और मीनाक्षी के माता-पिता नेमीचंद व गुड्डी बाई का निधन 4 वर्ष पूर्व एक सड़क दुर्घटना में हो गया। ऐसे में बेसहारा हुई बच्चियों के लालन-पालन की जिम्मेदारी उठाई झालावाड़ की श्रीकृष्ण गौशाला समिति ने। शिक्षा पूरी होने के बाद जब उनके विवाह की बात आई तो समिति के अध्यक्ष दिलीप मित्तल ने पूजा का और संरक्षक शैलेन्द्र यादव ने मीनाक्षी का कन्यादान कर समिति द्वारा ली गई जिम्मेदारी को बखूबी पूर्ण किया। शहरवासियों ने दोनों बेटियों के पीहर पक्ष का दायित्व निभाया। विशेष बात यह रही कि पाणिग्रहण संस्कार गोशाला परिसर में ही सम्पन्न करवाया गया था। वैवाहिक कार्यक्रम में समाज सहयोग से दोनों बेटियों को 11-11लाख रुपये तक का सामान दिया गया वहीं 3 हजार से अधिक लोगों ने इस शुभ अवसर पर भोजन-प्रसादी पाई।

जयपुर

निर्धन गोस्वामी बेटी के हाथ पीले किए

जयपुर के विश्वकर्मा रोड नं. 17 निवासी ओमप्रकाश गोस्वामी दैनिक मजदूरी कर अपने परिवार का जैसे-तैसे पेट पालते हैं। बेटी सुशीला के विवाह की चिंता उन्हें रात-दिन परेशान कर रही थी। यह जानकारी जब विश्व हिंदू परिषद के स्थानीय कार्यकर्ताओं को पता चली तो उन्होंने विवाह का जिम्मा उठाते हुए स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से गोस्वामी समाज की बेटी के हाथ पीले किए।

पुष्कर (अजमेर)

अग्नि को साक्षी मानकर सर्व समाज के 13 जोड़े बने हमसफर

दिनों-दिन सर्वजातीय सामूहिक विवाह का बढ़ता प्रचलन बदलते समाज की नई तस्वीर है।

ऐसा ही परिदृश्य बीती 27 जून (भड़ल्या नवमी) को दिखा तीर्थराज पुष्कर में, जहाँ सर्व समाज के 13 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। आयोजन सेवा भारती से संबंधित श्रीराम जानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह द्वारा किया गया चतुर्थ प्रयास था। कार्यक्रम में पधारे रामसखा आश्रम के महंत श्री नंदरामशरण जी महाराज सहित उपस्थित गणमान्य लोगों ने नव-दंपतियों को आशीर्वाद दिया। समिति की ओर से सभी जोड़ों को नव-गृहस्थी का आवश्यक सामान दिया गया।

ऐसा ही एक कार्यक्रम पिछले दिनों 29 जून (देवशयनी एकादशी) को **सवाईमाधोपुर** में सम्पन्न हुआ जहां 5 जोड़े विवाह बंधन में बंधे। स्थानीय इकाई का यह दूसरा प्रयास था।

सपेरा बस्ती से 'अपनी बस्ती-अपना हवन' अभियान की हुई शुरूआत

जयपुर

नट, बंजारे, सपेरे, कालबेलिया आदि घुमंतू जातियों की बस्तियों में वर्ष भर तक चलाया जायेगा अभियान 'अपनी बस्ती-अपना हवन'। बीती 9 जुलाई को जयपुर की गोविंदपुरा निवारू लिंक रोड के पास स्थित सपेरा बस्ती में आयोजित हवन में अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रहलाद शर्मा व महेन्द्र कुमार ने हवन कराते हुए बस्ती वासियों से आहुति अर्पित कराई। यज्ञ की पूर्णाहुति पर बस्ती के सभी लोगों ने व्यसन छोड़ने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रकल्प 'घुमंतू जाति उत्थान न्यास' द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान के द्वारा विपन्न अवस्था में रह रहीं घुमंतू-अर्द्ध घुमंतू जातियों के बंधुओं को शेष समाज के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। समाज में समरसता का यह बड़ा प्रयास है।

इस अवसर पर संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि 'घुमंतू उत्थान न्यास' घुमंतू जातियों के बहन-भाइयों को सम्बल दे रहा है। इनकी बस्तियों में शिक्षा-संस्कार केन्द्रों के संचालन के साथ ही नि:शुल्क स्वास्थ्य कैंप भी आयोजित करवा रहा है। जब किसी को ईश्वर ने आर्थिक रूप से सम्पन्न किया है तो उसको अपने से पिछड़े भाई-बहन की मदद करनी चाहिए।

सपेरा बस्ती के कार्यक्रम को महामंडलेश्वर बालमुकुंदाचार्य जी तथा मुख्य अतिथि शेखावाटी हॉस्पिल, विद्याधर नगर, जयपुर के निदेशक डॉ.सर्वेश शरण जोशी ने भी संबोधित किया। शेखावाटी हॉस्पिटल की ओर से बस्ती में नि:शुल्क जांच और उपचार के लिए कैम्प लगाया गया। व्यास सेवा संस्थान की ओर से सपेरा बस्ती के बच्चों को स्टेशनरी वितरित की गई।

उत्थान न्यास के जयपुर महानगर प्रमुख राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि यह अभियान जयपुर की 125 बस्तियों में चलाया जाएगा। घुमंतू समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पहले से ही कई कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

घुमंतू समाज के बच्चों के लिए छात्रावास

उदयपुर

घुमंतू समाज के बच्चों के लिए उदयपुर में बीती 27 जून को एक छात्रावास का शुभारंभ किया गया है। यह छात्रावास स्थानीय बदनोर हवेली में प्रारम्भ किया गया है जिसको 'भारतीय संस्कृति अभ्युत्थान न्यास' द्वारा संचालित किया जायेगा।

इस अवसर पर घुमंतू समाज के शंभुलाल बागरिया, नारायणलाल, गणेशलाल, बागरिया सहित ट्रस्ट के अध्यक्ष हेमेन्द्र श्रीमाली, समाज बंधु व छात्रों के अभिभावक उपस्थित थे।

सीकर- इसी प्रकार का एक और छात्रावास सीकर में सेवा भारती के माध्यम से सोमानी आदर्श विद्या मंदिर में संचालित किया जा रहा है।

इन दोनों आवासीय छात्रावासों में घुमंतू परिवारों के अनाथ, असहाय और शिक्षा से वंचित बच्चों को पठन-पाठन के साथ-साथ सनातन हिंदू संस्कृति के माध्यम से संस्कारित भी किया जाएगा। संस्था की ओर से यहां रहकर अध्ययन करने वाले बच्चों को पाठ्य सामग्री के साथ-साथ दैनिक उपयोग की सामग्री नि:शुल्क दी जाएगी।

अभिभावकों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा एवं वर्षभर इनको सर्दी-गर्मी के कपड़े, जूते-चप्पल, किताबें, उत्तर पुस्तिकाएं, विद्यालय गणवेश आदि सब प्रकार की व्यवस्थाएं नि:शुल्क दी जाएगी। इसके साथ-साथ आधुनिक तकनीकी के साथ डिजिटल कक्षाओं के माध्यम से इनको पढ़ाया जाएगा एवं शारीरिक विकास के लिए प्रात: योग कक्षाएं एवं खेल के सभी प्रकार के साधन उपलब्ध करवाए जाएंगे। शतरंज के बादशाह एवं जिमनास्टिक के खिलाड़ी भी इस छात्रावास में तैयार किए जाएंगे।

चारागाह भूमि पर कब्जे का विरोध

आसपुर (डूंगरपुर) सैकड़ों की संख्या में थाने में गिरफ्तारी देने पहुंचे सनातन समाज के लोग। गोल गांव में चारागाह भूमि पर समुदाय विशेष के अवैध कब्जे को हटाने की मांग। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस बल तैनात।

वाल्मीकि बस्ती में भारत माता पूजन

बारां, वाल्मीकि बस्ती के बाल संस्कार केन्द्र पर 6 जुलाई को भारत माता पूजन कार्यक्रम उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बस्ती वासियों ने 51 दीपकों से अखंड भारत बनाकर भारत माता की महाआरती की गई। यह बाल संस्कार केन्द्र सेवा भारती द्वारा नि:शुल्क चलाया जा रहा है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती अरूणा शर्मा अंतिमा (सेविका समिति की सह जिला कार्यवाहिका) तथा मुख्य वक्ता विभाग प्रचार प्रमुख राजेन्द्र शर्मा ने समाज में ऊँच-नीच समाप्त करने पर जोर दिया।

उदयपुर

सोशल मीडिया के माध्यम से रोजगार व कौशल विकास

स्वदेशी जागरण मंच अब युवाओं और गृहिणियों तक अपनी पहुँच बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म का उपयोग करने जा रहा है।

प्रांत के प्रचार प्रमुख श्री धीरज बोधा ने बताया कि इन प्लेटफॉर्म के माध्यम से रोजगार की उपलब्धता, स्वावलम्बन के अवसर या कौशल विकास तथा संगठन की गतिविधियों की जानकारी आमजन को आसानी से उपलब्ध हो सकेगी।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के होने से लघु उद्योग, स्थानीय उद्योग और नए स्टार्टअप आदि को मंच मिलेगा। ऐसे युवा व्यवसायी जिन्होंने नौकरी के पीछे न जाकर अपने पैतृक व्यापार को ऊँचाई पर पहुँचाया या स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर अन्य लोगों को रोजगार दिया ऐसे लोगों की जानकारी भी उक्त प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध रहेगी।

बीती 29 जून को मंच के फेसबुक प्रोफाइल व पेज, इंस्टाग्राम आईडी और ट्विटर एकाउंट का लोकार्पण संघ के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री श्रीवर्धन ने किया।

बूंदी

पहली बार बंजारा समाज के आराध्य लक्खीशाह महाराज की 444वीं जयंती पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन

बूंदी में बीती 4 जुलाई को बड़ा ही अद्भुत परिदृश्य देखने को मिला। अखाड़ेबाज अपने करतब दिखा रहे थे तो पंजाबी बैंड की मधुर ध्वनि शहरवासियों का मन मोह रही थी। अवसर था बंजारा समाज के आराध्य श्री लक्खी शाह महाराज की 444वीं जयंती का। पहली बार आयोजित इस विशाल शोभायात्रा में समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता दिखाई।

शोभायात्रा में श्री रूप सिंह जी, संत सेवालाल जी, श्री गुरुनानक देव जी, गुरु तेगबहादुर जी की प्रतिमाएं भी बग्गियों में शामिल की गई थी। शोभायात्रा का समापन बाईपास स्थित गुरुद्वारा में हुआ जहाँ आयोजित कार्यक्रम में बोर्ड की परीक्षाओं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले बंजारा समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय बंजारा सेना के नेतृत्व में बंजारा समाज विकास समिति द्वारा किया गया था।

जानकारी हो कि मुगल आक्रांता औरंगजेब के आदेश पर जब नौंवे गुरु तेगबहादुर जी का बलिदान हुआ तो उनकी पार्थिव देह को मुगलों से लोहा लेते हुए दिल्ली के चांदनी चौक से रकाबगंज ले आए थे 95 वर्षीय लक्खी शाह बंजारा। गुरु देह को आक्रांताओं से मुक्त कराने के कारण उनका आज भी सिख समाज में विशेष स्थान है।

लव-जिहाद

जयपुर, शराब के लिए पैसे नहीं देने पर लिव इन रिलेशन में रह रहे युवक इरशाद ने युवती संध्या पर किया चाकू से हमला। दर्ज रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने मामले में इरशाद को किया गिरफ्तार। आरोपी पीड़िता को 6 वर्ष पहले प्रेम जाल में बहला-फुसलाकर मध्यप्रदेश भगा ले गया था।

विद्या भारती के छात्रों का सम्मान

जयपुर, बीती 1 जुलाई को विद्या भारती द्वारा 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 97 प्रतिशत से अधिक अंक लाकर कीर्तिमान स्थापित करने वाले 38 छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि अलवर के सांसद महंत बालकनाथ योगी एवं विद्या भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री गोविन्द चंद महंत ने संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रदीप शेखावत, सूचना आयुक्त हरियाणा ने की।

फिल्म 'अजमेर-92' पर प्रतिबंध नहीं- याचिका खारिज

जयपुर, राजस्थान हाईकोर्ट ने अजमेर 92 फिल्म को बैन करने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। फिल्म में चिश्ती सरनेम और दरगाह में फिल्माए गए दृश्य को लेकर याचिका लगाई गई थी। न्यायाधीश ने यह आदेश अंजुमन मोइनिया फखरिया चिश्तिया खुद्दाम ख्वाजा साहब, दरगाह शरीफ की ओर से दायर याचिका पर दिया।

मानसरोवर, जयपुर

नाबालिग का अपहरण कर धर्मपरिवर्तन का किया प्रयास

मतांतरण हो या लव जिहाद कट्टरपंथियों के लिए बालिग या नाबालिग कोई मायने नहीं रखता। ताजा घटनाक्रम जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र का है जहां आरोपी सोहेल खान ने एक नाबालिग हिंदू युवती (15 वर्षीया) को बहला फुसलाकर उसका अपहरण किया और धर्म परिवर्तन करने की कोशिश की।

डीसीपी (साउथ) योगेश गोयल ने मामले की गंभीरता देखते हुए आरोपी के यहां से हिंदू लड़की को बरामद कर परिजनों को सौंप दिया। चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर) निवासी सोहेल के विरुद्ध दायर एफआईआर के बाद उसे पॉक्सो एक्ट के अंतर्गत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

मानवता के लिए योग के साथ राष्ट्रयोग को प्रखर बनाने का समय है : उत्तम स्वामी

बीती 28 जून को उदयपुर स्थित विद्या निकेतन सभागार में सप्त दिवसीय योग प्रशिक्षण एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 21 शिक्षकों ने योग शिक्षक श्री श्रीवर्धन के निर्देशन में सूर्य नमस्कार तथा विभिन्न आसनों का प्रशिक्षण प्राप्त कर सामूहिक प्रदर्शन किया।

बांसवाड़ा के ईश्वरानंद ब्रह्मचारी उपाख्य उत्तम स्वामी महाराज ने समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए योग के साथ ही राष्ट्रयोग को प्रखर बनाने की बात कही।

भारतीय संस्कृति अभ्युत्थान न्यास, आरोग्य भारती व एनएमओ की ओर से यह आयोजन किया गया था।

उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों को पढ़ाई जायेगी 50 महापुरुषों की जीवनी - आप इनमें से कितनों के बारे में जानते हैं?

उत्तर प्रदेश सरकार ने देश की स्वतंत्रता में अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले महापुरुषों की जीवनी कक्षा नौंवी से बारहवीं तक पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है।

ऐस राष्ट्रभक्त महापुरुषों के विषय में आप कितना जानते हैं, यह आत्मावलोकन आप नीचे दिए गए नामों को पढ़कर करें।

चन्द्रशेखर आजाद, बिरसा मुंडा, बेगम हजरत महल, वीर कुंवर सिंह, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, गौतम बुद्ध, ज्योतिबा फूले, छत्रपति शिवाजी महाराज, विनायक दामोदर सावरकर, विनोबा भावे, श्रीनिवास रामानुजन, जगदीशचन्द्र बोस, मंगल पांडे, ठाकुर रोशन सिंह, सुखदेव, लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, खुदीराम बोस, स्वामी विवेकानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, डॉ.भीमराव अंबेडकर, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं.दीनदयाल उपाध्याय, महावीर स्वामी, महामना मदन मोहन मालवीय, अरविंद घोष, राजा राम मोहन राय, सरोजिनी नायडू, नाना साहब, महर्षि पतंजलि, शल्य चिकित्सक सुश्रुत, डॉ.होमी जहांगीर भाभा, रामकृष्ण परमहंस, गणेश शंकर विद्यार्थी, राजगुरु, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लाल बहादुर शास्त्री, रानी लक्ष्मी बाई, महाराणा प्रताप, बंकिम चन्द्र चटर्जी, शंकराचार्य, गुरु नानक देव, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, रामानुजाचार्य, पाणिनी, आर्यभट्ट और सीवी रमन।

कटक

स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती के हत्यारों को गिरफ्तार करे सरकार

जनजातीय समुदाय के बीच हिन्दुत्व के प्रचार-प्रसार में जुटे पूज्य स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती के हत्यारों को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है।

23 अगस्त, 2008 को स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती की असामाजिक तत्वों द्वारा हत्या कर दी गई थी, किंतु उनके हत्यारों की अभी तक पहचान ही नहीं हुई है। इस मामले में जो जांच आयोग बनाए गए, उनकी रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया गया है। ओडिशा में बड़े पैमाने पर मिशनरी मतांतरण के षड्यंत्रों में जुटे हैं। राज्य सरकार को तत्काल इस पर रोक लगानी चाहिए। झारखंड के रास्ते पश्चिम बंगाल में होने वाली गोवंश की तस्करी पर भी तुरंत रोक लगाई जानी चाहिए।

ओडिशा सरकार से मांग की गई है कि जल्द से जल्द रिपोर्ट सार्वजनिक करे। पूज्य लक्ष्मणानंद सरस्वती का बलिदान व्यर्थ नहीं होगा और विश्व हिन्दू परिषद उनके संकल्प की सिद्धि में जुटी है।

पुरी के पूज्य शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वती जी का पुतला दहन करने तथा उनका अपमान करने वाले कम्युनिस्ट विचार से प्रेरित हिंदू द्रोहियों की गिरफ्तारी की मांग भी की गई है।

पांच भाषाओं के साहित्य पुरोधाओं का अभिनंदन

अजमेर, अखिल भारतीय साहित्य परिषद की अजमेर इकाई द्वारा गुरु पूर्णिमा की पूर्व वेला पर बीती 2 जुलाई को पांच भाषाओं के साहित्य पुरोधाओं का नागरिक सम्मान उनके निवास पर जाकर किया गया। ''साहित्य गुरु वंदन'' कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी व संस्कृत के डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, सिंधी भाषा की डॉ.कमला गोकलानी, राजस्थानी भाषा के डॉ. विनोद सोमानी हंस, मराठी के श्री प्रभाकर वैद्य तथा पंजाबी के श्री बख्शीश सिंह को शॉल, श्रीफल और गीता भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साहित्य परिषद से जुड़े विविध विधा के साहित्यकार, कवि व गणमान्य बंधु उपस्थित रहे।

उत्तर जांचे कि आप कितने ज्ञानवान हैं : कीचक, अमृतसर, नारायण पण्डित, आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य), बौधायन, अंगद, हरिद्वार, अठारह, जोधपुर, उड़ीसा

आवश्यक है भोजन में फाइबर

ऑक्सफोर्ड एकेडमिक के एक सर्वे के अनुसार यदि रोजाना की डाइट में फाइबर (रेशेदार पदार्थ) की मात्रा 10 ग्राम बढ़ा दें तो आकस्मिक मृत्यु का खतरा 10 प्रतिशत कम हो जाता है।

क्यों है जरूरी : फाइबर सीधा आंतों से होता हुआ शरीर से बाहर निकल जाता है, साथ ही आंतों में उपस्थित अन्य अपशिष्ट पदार्थों को भी बाहर निकाल देता है। इससे कब्ज की समस्या दूर होती है, पाचन अच्छे से होता है, आंतों में पाए जाने वाले हैल्दी बैक्टीरिया की मात्रा बढ़ती है। फाइबर की मात्रा भोजन में बढ़ाने से आंतों व ब्रेस्ट कैंसर का खतरा भी कम होता है। साथ ही हृदय रोग, मोटापा, कमजोर इम्यूनिटी, मधुमेह और कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित होता है।

फाइबर युक्त कुछ पदार्थ : अलसी, बादाम, गेहूँ का चोकर, बाजरा, जौ, राई का आटा, राजमा, दाल, खीरा, टमाटर, ककड़ी, चुकंदर, साबुत अनाज, पत्तेदार सब्जी आदि।

बाल प्रश्नोत्तरी-38 के परिणाम

गर्व हितेश मैधा रेखाराम आँचल

1. गर्व वैष्णव, सोडाला, जयपुर
2. हितेश सुथार,गांधी चौक, जालोर
3. मैधा गुप्ता, महावीर नगर, कोटा
4. रेखाराम, धोरीमन्ना, बाड़मेर
5. आँचल माली, माण्डलगढ़, भीलवाड़ा
6. तनिषा बुनकर, झालानाडूंगरी, जयपुर
7. गरिमा अरोड़ा, रायसिंहनगर, श्रीगंगानगर
8. अंशिका गोयल, शिवाजी नगर, बारां
9. चन्द्रपाल, सादुलशहर, भीलवाड़ा
10. राहुल, बिलाड़ा, जोधपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर : 1.(क) 2.(ग)3.(ग) 4.(क)5.(ग)6.(क)7.(घ)8.(क) 9.(क)10.(ख)

गीता- दर्शन

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। (2/57)

श्रीकृष्ण कहते हैं- जो पुरुष सर्वत्र स्नेहरहित होकर शुभ या अशुभ वस्तु को प्राप्त कर न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है उसकी बुद्धि स्थिर है।

आओ संस्कृत सीखें-23

- चाहता हूँ। - **इच्छामि**
- आ रहे हैं। - **आगच्छन्ति**
- किसने दिया? - **कः दत्तवान्**

कुकिंग टिप्स

लजीज पोहा : पोहे का नाश्ता तैयार कर रहे हों तो मसाला तैयार करते समय आलू को बारीक काटकर इसमें थोड़ा सा नमक डालकर फ्राई करें। इससे आलू जल्दी फ्राई होंगे और पोहे का स्वाद भी बढ़ेगा।

घरेलू नुस्खा

लगातार उल्टी होना : एक पके हुए टमाटर के रस में चार छोटी इलाचयी व 5-6 काली मिर्च को कूटकर मिला लें। अब इस घोल को उल्टी करने वाले व्यक्ति को पिला दें, तुरंत लाभ होगा।

गौरव के क्षण

- अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ ने भारतीय खगोलशास्त्री अश्विन शेखर (38) के उल्का पिंड क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए एक छोटे ग्रह का नाम उनके नाम पर रखा है। इस ग्रह को 33928 अश्विन शेखर = 2000 एलजे 27 के नाम से जाना जाएगा।

प्लास्टिक थैली निकालने के लिए अब गाय का पेट फाड़ने की जरूरत नहीं..

गाय के पेट से प्लास्टिक की थैली को निकालने का सफल उपचार यहाँ दिया जा रहा है।

सामग्री: 100 ग्राम सरसों का तेल, 100 ग्राम तिल का तेल, 100 ग्राम नीम का तेल और 100 ग्राम अरण्डी का तेल

विधि: इन सबको खूब मिलाकर 500 ग्राम गाय के दूध की बनी छाछ में डालें तथा 50 ग्राम फिटकरी, 50 ग्राम सेंधा नमक पीस कर डालें। ऊपर से 25 ग्राम साबुत राई डाले। यह घोल तीन दिन तक पिलायें और साथ में हरा चारा भी दें। ऐसा करने से जुगाली करते समय गाय के मुँह से पॉलीथीन बाहर निकालती है। *(9414041752)*

-**डॉ.कैलाश मोड़े**, *पशुपालन अधिकारी,न.नि.जयपुर*

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. अज्ञातवास में भीम ने विराटराज के किस सेनापति का वध किया?
2. प्रसिद्ध 'हरमंदिर साहिब' पंजाब के किस नगर में स्थित है?
3. प्रसिद्ध नीति पुस्तक 'हितोपदेश' के लेखक कौन हैं?
4. चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाने वाले शिक्षक का नाम क्या था?
5. भारत के प्राचीन गणितज्ञ और शुल्ब सूत्र के रचयिता कौन थे?
6. सुग्रीव के राजा बनने के बाद किष्किन्धा के युवराज कौन बने?
7. किस प्राचीन और पवित्र नगरी का एक नाम 'माया' भी है?
8. महर्षि वेदव्यास रचित 'महाभारत' में एक लाख श्लोक हैं। ये कितने पर्वों में हैं?
9. मेहरानगढ़ नाम का विशाल दुर्ग राजस्थान के किस नगर में है?
10. कोणार्क का सूर्य मंदिर किस राज्य में स्थित है?

उत्तर इसी अंक में

बोधकथा

कला का सम्मान

राजा दरबार में अपने सभासदों से विचार-विमर्श कर रहा था तभी एक व्यक्ति दरबार में आया। वह बेहद आकर्षक कपड़े पहने था। उसके चेहरे पर चमक थी। उसने एक बड़ा-सा गट्ठर ले रखा था। उसे देखकर दरबारी तो बहुत प्रभावित हुए पर राजा ने उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया।

उस व्यक्ति ने राजा का अभिवादन करने के बाद बताया कि वह एक चित्रकार है। राजा ने इस बार उसमें थोड़ी रुचि ली। फिर उस व्यक्ति ने गट्ठर खोलकर अपने चित्र राजा को दिखाए।

चित्रों को देखकर राजा ने चित्रकार की बहुत प्रशंसा की और उसे बैठने के लिए आसन दिया। बाद में राजा ने उसे बहुत सा धन दे कर विदा किया और दरबार में पुनः आने का निमंत्रण भी दिया। राजा का व्यवहार देख उसने जिज्ञासावश पूछा, महाराज! यह बात मेरी समझ में नहीं आई? राजा ने प्रश्न किया- कौन सी बात? चित्रकार ने कहा- महाराज, जब मैं आपके दरबार में आया था तो आपने मेरी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया पर उसके बाद आपने मेरा सम्मान किया, मुझे धन दिया और दरबार में पुनः आने का निमंत्रण भी दे रहे हैं। ऐसा क्यों?

राजा ने जवाब दिया, मैं व्यक्ति के गुणों को महत्व देता हूँ, उसके वस्त्रों और आभूषणों को नहीं। कपड़े और गहने तो कोई भी प्राप्त कर सकता है पर योग्यता नहीं। तुम्हारे साथ भी यही हुआ। तुम्हारे चित्र देखकर मुझे लगा कि तुम एक अच्छे कलाकार हो, इसलिए तुम्हें समुचित सम्मान दिया। यह सम्मान, मैं तुम्हें नहीं, तुम्हारी कला को दे रहा हूँ।

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-40)

(अपनी पासपोर्ट फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.(   ) 2.(   ) 3.(   )

4.(   ) 5.(   ) 6.(   )

7.(   ) 8.(   ) 9.(   )

10.(   )

नाम .... कक्षा...............

पिता का नाम ....

उम्र .... पूर्ण पता.........................

....

.... पिन.........................

मोबाइल नं. ....

बाल प्रश्नोत्तरी - 40

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों, 1 जुलाई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। 10 से अधिक प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए जाने पर निर्णय लॉटरी से होगा। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 5 अगस्त, 2023**

1. देश में आपात काल कब लागू किया गया ?
(क)25 जून 1975 (ख)25 जून 1977 (ग) 25 जून 1972 (घ) 25जून 1970

2. भारत सरकार ने गीता प्रेस को कौन सा पुरस्कार देने की घोषणा की है?
(क) गांधी शांति (ख) नोबेल शांति (ग) ऑस्कर (घ) पुलित्जर

3. गीता प्रेस द्वारा श्रीमद्भागवद्गीता की कितनी प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं?
(क) 15.2 करोड़ (ख)16.2 करोड़ (ग)14.2 करोड़ (घ) 20 करोड़

4. ''गाय क्यों नहीं काटी जा सकती?'' यह किस राज्य के मंत्री का कथन है?
(क) मणिपुर (ख) केरल (ग) उड़ीसा (घ) कर्नाटक

5. क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद को 15बेंत की सजा किस जेल में दी गई थी?
(क) मेरठ (ख) वाराणसी (ग) आगरा (घ) इलाहाबाद

6. 'श्री प्रेम प्रकाश पंथ' के संस्थापक कौन थे?
(क) आसूराम जी (ख) टेऊँराम जी (ग) सर्वानन्द जी (घ) स्वामी लीलाशाह

7. स्वतंत्रता सेनानी बीरबल सिंह जीनगर का बलिदान दिवस कब आता है?
(क) 1 जुलाई (ख) 16 जुलाई (ग) 20 जून (घ) 15 जुलाई

8. भगवान जगन्नाथ रथयात्रा में संघ के कितने स्वयंसेवकों ने सेवाएं दी?
(क) 1200 (ख) 1800 (ग) 1500 (घ) 1100

9. इस बार महाराजा दाहिर सेन का कौन सा बलिदान दिवस मनाया गया?
(क) 1310वां (ख) 1312वां (ग) 1311वां (घ) 1315वां

10. 37वां स्वामी विवेकानन्द सेवा सम्मान किसे दिया गया है?
(क)नारायण संघ (ख)लखीमन संघ (ग)मानवसेवा संघ (घ)आरोग्य सेवा संघ

गणित पहेली

नीचे दी गई आकृति में वर्ग एवं त्रिभुजों की संख्या ज्ञात कीजिए।

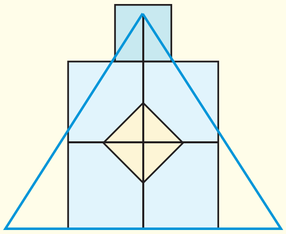

उत्तर: 21 त्रिभुज, 7 वर्ग

वर्ग पहेली

नीचे के वर्गों में भारत के 10 प्राचीन वैज्ञानिकों के नाम दिए हुए हैं। इनके नाम खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए।

च	र	मा	हा	व	श्री	आ
र	ल	भा	स्क	रा	चा	र्य
क	णा	द	री	ह	त	भ
न	य	धा	बौ	मि	श्रु	ट्ट
र्जु	स्त्य	जी	चं	हि	सु	श्रु
गा	ग	जा	दा	र	गा	टी
ना	अ	ब्र	ह्म	गु	प्त	श्री

उत्तर : आर्यभट्ट, चरक, भास्कराचार्य, नागार्जुन, ब्रह्मगुप्त, सुश्रुत, बौधायन, कणाद, अगस्त्य, वराहमिहिर

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

45

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

नेताजी अपने विश्वस्त साथियों के साथ एक विमान से प्रस्थान कर गए... महानायक की यह अनुत्तरित विदाई थी ...

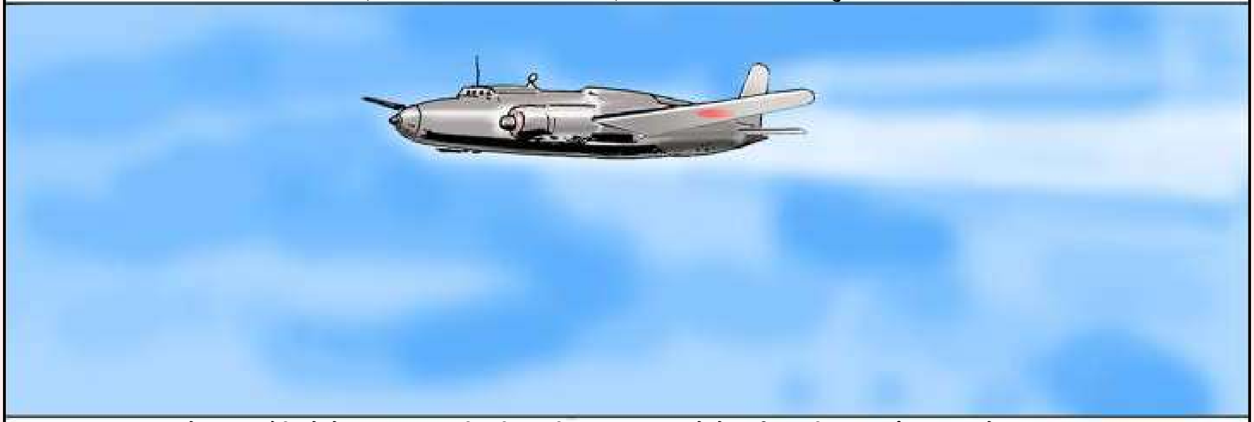

23 अगस्त,1945 को जापान रेडियो ने समाचार प्रसारित किया कि 18 अगस्त को नेताजी का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया... उनका शरीर झुलस गया.... उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया... जहां उनका देहान्त हो गया.... यह खबर किसी आघात से कम न थी...

किन्तु उनके करोड़ों शुभचिंतकों ने उनकी मृत्यु को कभी स्वीकार नहीं किया... उन्हें सदैव यह आशा बनी रही कि उनके सबसे प्रिय नेता अवश्य लौटेंगे... कभी सुनते कि नेताजी रूस में है तो कभी खबर फैलती नेताजी छद्म रूप में कहीं रह रहे हैं...

... समाचार पत्रों में भी उनके जीवित होने के साक्ष्य छपते किन्तु नेताजी कभी नहीं लौटे। उनकी जीवन यात्रा जितनी रोमांचकारी थी, उतनी ही उनकी विदाई रहस्यमय रही और यह भी सत्य है कि वो देश के सबसे अधिक लोकप्रिय नेता के रूप में सदैव शीर्ष पर ही रहे।

ब्रिटेन विश्वयुद्ध का विजेता राष्ट्र था किन्तु नेताजी व आजाद हिन्द फौज के युद्ध से यह स्वीकार चुका था कि अब भारत को गुलाम रखना असंभव है।... अन्ततः नेताजी व क्रांतिकारियों का शौर्य, बलिदान तथा महात्मा गांधी का अहिंसक संघर्ष रंग लाया...
15 अगस्त, 1947 को भारत ब्रिटेन की गुलामी से मुक्त हो गया... जय हिन्द का उद्घोष भारत के हर क्षेत्र में गुजायमान होने लगा।

स्वाधीनता की पावन बेला पर हर भारतीय हर्षित था, किंतु इसी स्वाधीनता के शिल्पी नेताजी की कमी सब को व्यथित कर रही थी...

समाप्त

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-31 जुलाई,2023)
(10 जुलाई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर (1 से 15 अगस्त, 2023)

प्र.श्रावण (अधिक) पूर्णिमा से द्वि. श्रावण (अधिक) कृष्ण 14 तक

जन्म दिवस

1 अगस्त (1882) - राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जयंती
2 अगस्त (1861) - आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय जयंती
3 अगस्त (1886) - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती
12 अगस्त (1919) - डॉ. विक्रम साराभाई जयंती
13 अगस्त (1638) - वीर दुर्गादास राठौड़ जयंती
15 अगस्त (1872) - महर्षि अरविंद जयंती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

5 अगस्त (2005) - मनोज चौहान का बलिदान (बाढ़ राहत कार्य)
11 अग.(1908) - क्रांतिकारी खुदीराम बोस का बलिदान
13 अग. (1795) - महारानी अहिल्याबाई होल्कर का बलिदान
14 अग. (1915) - सरदार बंता सिंह का बलिदान
15 अग. (1942) - देवशरणसिंह, फुलेनाप्रसाद, उदयचन्द का बलिदान
15 अग.(1947) - सरदार अजीत सिंह का महाप्रयाण

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

2 अगस्त (1954) - पुर्तगालियों से दमन-दीव की मुक्ति
5 अगस्त (2020) - राममंदिर शुभारम्भ दिवस (अयोध्या में)
5 अगस्त (2019) - कश्मीर से अनुच्छेद 370 तथा 35ए हटा
- संसद में सीएए पारित
8 अगस्त (1509) - श्रीकृष्ण देवराय का राज्याभिषेक
9 अगस्त (1925) - काकोरी कार्रवाई
9 अगस्त (1942) - भारत छोड़ो आंदोलन (संपूर्ण देश में प्रारम्भ)
12 अगस्त - अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस
14 अगस्त (1947) - विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
15 अगस्त (1947) - खण्डित भारत की स्वतंत्रता

भूल सुधार : 16जून के अंक में अंतिम पृष्ठ पर 'आगामी पक्ष के विशेष अवसर' शीर्षक के अंतर्गत छठी पंक्ति में प्रो.राजेन्द्र शर्मा की जगह प्रो.राजेन्द्र सिंह पढ़ें। टाइपिंग की इस भूल के लिए हमें अत्यंत खेद है।

पंचांग - श्रावण (अधिक) शुक्ल पक्ष

युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945
(18 जुलाई से 1 अगस्त,2023 तक)

पुरुषोत्तम(अधिक) मास प्रारंभ- 18 जुलाई, **विनायक चतुर्थी**- 21 जुलाई, **कमला एकादशी व्रत**- 29 जुलाई, **प्रदोष व्रत** - 30 जुलाई, **सत्य पूर्णिमा व्रत**-1 अगस्त

ग्रहस्थिति

चन्द्रमा : 18 से 20 जुलाई स्वराशि **कर्क** में, 21-22 जुलाई **सिंह** राशि में, 23 से 25 जुलाई **कन्या** राशि में, 26-27 जुलाई **तुला** राशि में, 28-29 जुलाई नीच की राशि **वृश्चिक** में, 30-31 जुलाई **धनु** राशि में तथा 1 अगस्त को **मकर** राशि में गोचर करेंगे।

श्रावण (अधिक) शुक्ल पक्ष में **गुरु** व वक्री **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **मंगल** भी क्रमशः पूर्ववत कर्क व सिंह राशि में बने रहेंगे। **बुध** 24 जुलाई को प्रातः 4:32 बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 23 जुलाई को प्रातः 7:05 बजे सिंह राशि में रहते हुए वक्री होंगे।

शत शत नमन

जन्म दिवस

भारत रत्न
पुरुषोत्तम दास टंडन
1 अगस्त

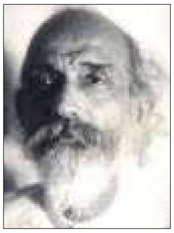

(1882-1962)

महायोगी व दार्शनिक
महर्षि अरविंद
15 अगस्त

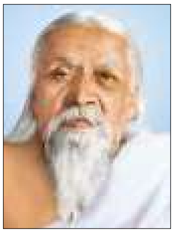

(1872-1950)

पुण्यतिथि

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
सरदार बंता सिंह
14 अगस्त

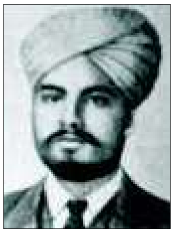

(1890-1915)

प्रतिष्ठा में, ______________________

____

____

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय नगर, क्षेत्र, मालवीय नगर-302017 **सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल**
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जुलाई,2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर